शिक्षा-सन्दर्भ: मानवीय आचरण सूत्र

मानवीय आचरण सूत्र (अध्याय:, संस्करण: , पेज नंबर:)

- समझदारी का वैभव सुख, समाधान, समृद्धि, परस्परता में विश्वास और नित्य उत्सव होता ही रहता है। इसके लिए समझदारी, बौद्धिक प्रयोग, विवेकपूर्वक तथा समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व प्रमाणित होने की विधि से सर्व मानव सुखी होते हैं। इसका प्रयोग न्याय व समाधानपूर्वक-सार्थक सुखी होना पाया जाता है। धन का प्रयोग उदारतापूर्वक करने से सार्थक सुखी होते हैं। बल का प्रयोग दया के साथ जीने देने के रूप में सार्थक होता है। रूप के साथ सच्चरित्रता, यथा - स्व-धन, स्व-नारी, स्व-पुरुष, दयापूर्वक कार्य-व्यवहार विचार से ही सार्थक सुखी होना होता है। यह सर्व शुभ होने की विधि है जो लोक-शिक्षा और शिक्षा-संस्कार पूर्वक सार्थक होता है।
- मानवीय-शिक्षा-संस्कार प्रमाणमूलक होना समाधान है।
- मानवत्व शिक्षा संस्कार का सूत्र है।
- मानवीय शिक्षा-संस्कार का प्रमाण मानवत्व है।
- मानवीय शिक्षा संस्कार ही जागृत परम्परा में, से, के लिये सार्थक सूत्र व्याख्या है।
- ज्ञान-विज्ञान-विवेक पूर्ण शिक्षा संस्कार ही मानवत्व है।
- मानवीय शिक्षा-संस्कार का दायित्व-कर्तव्य परिवार-सभा से विश्व पारिवार-सभा में दायित्व-कर्तव्य रूप में निहित रहता है। इसका निर्वाह योग्य होना मानवीयता है।
- शिक्षा-संस्कार सर्वतोमुखी समाधानकारी ज्ञान-विज्ञान-विवेक सम्पन होने का प्रमाण मानवत्व है। यह परम्परा का कर्तव्य हर मानव सन्तान का अधिकार है। यह मानवत्व है।
- जागृत शिक्षा परम्परा अखण्ड सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में सम्पन्न होना मानवत्व है।
- अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ही 'मध्यस्थ दर्शन' सह-अस्तित्ववाद है। इस पर शिक्षा संस्कार में सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान बोध, जीवन ज्ञान बोध, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान बोध परम्परा होना मानवत्व है।
- शिक्षा में, से, के लिये व्यापक वस्तु रूपी ऊर्जा में सम्पूर्ण एक-एक वस्तु सम्पृक्त नित्य वर्तमान क्रियाशील विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति के रूप में होने की अवधारणा समाहित अनुभव सम्पन्न रहना मानवत्व है।
- सह-अस्तित्ववादी शिक्षा संस्कार में प्रत्येक एक अपने-अपने 'त्व' सहित व्यवस्था है। समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने का अध्ययन मानवत्व है।
- मानवीय शिक्षा-संस्कार में सह-अस्तित्व नित्य प्रमाण होने का बोध सम्पन्न होना, करना-कराना, करने के लिये सहमत होना मानवत्व है।
- शिक्षा में मानवत्व का बोध होना सर्व मानव सन्तान में, से, के लिये मौलिक अधिकार है। यह मानवत्व है।

शिक्षा-सन्दर्भ: संवाद भाग १

संवाद – I (अध्याय:, संस्करण: प्रथम, मुद्रण: 2011, पेज नंबर:)

शिक्षा के लिए विकल्प

आदिकाल से ही मनुष्य-परंपरा में शिक्षा की बात है। यह जंगल-युग से ही है। शिक्षा के बारे में आदमी चर्चा करते ही आया है। इस क्रम में हमारे देश में वैदिक-शिक्षा की बात आयी। दूसरे देश में बाइबिल को शिक्षा में लाने की बात हुई। तीसरे देश में कुरान को शिक्षा में लाने की बात हुई। ऐसे ही विभिन्न प्रकार की शिक्षा-परम्पराएं धरती पर स्थापित हुई। यह क्रम चलते-चलते आज के समय में विज्ञान-शिक्षा का सभी देशों में लोकव्यापीकरण हो चुका है। विज्ञान-शिक्षा से अपेक्षा थी कि इससे सबको तृप्ति मिलेगी, लेकिन इससे तृप्ति मिला नहीं।

अभी तक जो कुछ भी शिक्षा में आया, उसके "विकल्प" के रूप में मध्यस्थ-दर्शन का "चेतना-विकास, मूल्य-शिक्षा" का प्रस्ताव है। जंगल युग से आज तक आदमी जीव-चेतना में जिया है। मनुष्य ने जीव-चेतना में जीते हुए, जीवों से अच्छा जीने के क्रम में शरीर-सुविधा से सम्बंधित सभी वस्तुएं प्राप्त कर लीं। इसमें खाने-पीना, कपड़ा, मकान, यान-वाहन, दूर-संचार की सभी वस्तुएं शामिल हैं। यह सब होने के बावजूद मनुष्य को शिक्षा से संतुष्टि नहीं मिली। इसका मूल कारण यह है - मनुष्य ज्ञान-अवस्था का है, और उसको जीव-चेतना की शिक्षा से संतुष्टि मिल नहीं सकती।

इसलिए "विकसित चेतना" के अध्ययन को शिक्षा में लाने के लिए प्रस्ताव है। मानव-चेतना, देव-चेतना, दिव्य-चेतना "विकसित चेतना" है। इस तरह जी कर मनुष्य "कृत-कृत्य" हो सकता है। "कृत-कृत्य" होने का मतलब है - मानव जिस बात के लिए ज्ञान-अवस्था में उदय हुआ है, वह सार्थक होना। इस प्रस्ताव के संपर्क में जो भी आये हैं, उनका यह स्वीकृति है - ऐसा होना बहुत ज़रूरी है।

परिवार में हर व्यक्ति मानव-चेतना में पारंगत हों, देव-चेतना में जी सकें, दिव्य-चेतना को प्रमाणित कर सकें - ऐसा "अधिकार" बन सके। कितने लोग इस तरह पारंगत हुए, कितने लोग इस तरह प्रमाणित हो सकें - इसको पहचानने के लिए इस अनुभव-शिविर का आयोजन है।

"चेतना-विकास" से आशय है - मानव-चेतना में जीने के लिए विश्वास स्वयं में पैदा होना।मानव के लिए मानवत्व ही स्वत्व के रूप में पहचानने की आवश्यकता है। देवत्व और दिव्यत्व श्रेष्ठतर और श्रेष्ठतम हैं। मानवत्व से श्रेष्ठता की शुरुआत है। इस आधार पर इसके लिए पारंगत होने की बात आती है।

मानवत्व का क्रिया-स्वरूप है - मानव के साथ न्याय-धर्म-सत्य पूर्वक जी पाना, और मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ नियम-नियंत्रण-संतुलन पूर्वक जी पाना। यदि ऐसे जीना बन पाता है तो हम परिवार में व्यवस्था पूर्वक जी पाते हैं। मानव-चेतना पूर्वक मनुष्य समाधानित होता है, और परिवार में "समाधान-समृद्धि" प्रमाणित करने योग्य होता है। इस प्रकार मनुष्य के जीने में विषमता समाप्त होता है। विषमता समाप्त होने का पहला मुद्दा है - "नर-नारी में समानता"। समझदारी को ही नर-नारियों में समानता के बिंदु के रूप में पहचाना जा सकता है। यदि इस बिंदु को पाना है, तो मानव-चेतना को अपनाना ही होगा। मानव-चेतना के इस प्रस्ताव को लेकर हम इस घर के बाहर तक तो पहुच गए हैं, पर यह संसार तक पहुँच गया - मैं इस पर अभी विश्वास नहीं करता हूँ। अब हमारी सभी की जिम्मेदारी है - यह प्रस्ताव संसार में जल्दी से जल्दी कैसे पहुंचे। "जल्दी" इसलिए आवश्यक है - क्योंकि धरती बीमार हो चुकी है, प्रदूषण छा गया है, अपराध-प्रवृत्ति बढ़ गयी है, अपने-पराये की दूरियां बढ़ गयी हैं।

आज की स्थिति में सभी देशों को यह चेतावनी हो चुकी है - इसी तरह हम चलते रहे तो धरती बचेगा नहीं! धरती को बचाना है तो मनुष्य का भ्रम-मुक्त, अपराध-मुक्त, और अपने-पराये की दीवारों से मुक्त होना आवश्यक है। अधिकाँश लोग धरती को बचाने के पक्ष में हैं। इने-गिने लोग ही धरती को न बचाने के पक्ष में होंगे। धरती को बचाने के लिए मानव-चेतना के प्रस्ताव को हरेक व्यक्ति के पास ले जाने की ज़रुरत है।

इस प्रस्ताव को स्वीकारने में वृद्ध पीढ़ी को सबसे ज्यादा तकलीफ़ है, प्रौढ़ पीढ़ी को उससे कम, कौमार्य पीढ़ी को उससे कम, और बाल्य- पीढ़ी को सबसे कम तकलीफ है। यह हमारे सर्वेक्षण में आया है। तकलीफ का कारण है - उनके पूर्वाग्रह और पूर्वाभ्यास।

विज्ञान-शिक्षा के लोकव्यापीकरण क्रम में सभी देशों में शिक्षा-संस्थाएं स्थापित हो चुके हैं। इस प्रस्ताव को शिक्षा-संस्थाओं में पहुंचाने की आवश्यकता है।

इस प्रस्ताव को शिक्षा-संस्थाओं में पहुंचाने का स्वरूप क्या होगा? इस प्रस्ताव को शुद्धतः पहुंचाने की आवश्यकता है। छत्तीसगढ़ में राज्य-शिक्षा संस्थानों में इस प्रस्ताव को समझाने की शुरुआत की गयी - जिससे "सफलता" की शुरुआत हुई। शिक्षा-संस्थानों के अध्यापक और अधिकारी दोनों इससे सहमत हुए। सहमत होने के बाद अध्ययन शुरू किये। अध्यापकों द्वारा बच्चों तक यह शिक्षा पहुँचने लगेगी तो हम इस बात का प्रमाण हुआ मानेंगे। यदि छत्तीसगढ़ में यह पूरा पहुँचता है तो आगे दूसरे राज्यों में भी पहुंचेगा।

- अनुभव शिविर, अमरकंटक - जनवरी २०१० - में बाबा श्री नागराज शर्मा के उदबोधन से
(अध्याय:, पेज नंबर:188)
http://madhyasth-darshan.blogspot.in/2010/02/blog-post_7536.html

• विकल्पात्मक अनुसन्धान से प्राप्त ज्ञान का शिक्षा में समावेश - सम्मलेन २००९, हैदराबाद

मेरे बंधुओं!

मैं स्वयं को आप सभी के बीच पा करके सुख का अनुभव कर रहा हूँ। बहुत दूर-दूर से आप आए हैं। बहुत ध्यान लगा कर एक दूसरे की बात समझ रहे हैं। कहीं न कहीं अन्तिम निष्कर्ष निकलेगा ही, ऐसा विश्वास करके मैं उत्सवित हूँ। **विकल्पात्मक अनुसंधान से प्राप्त ज्ञान शिक्षा में किस प्रकार पहुंचेगा?** - उसको सुनने के लिए यहाँ इच्छा व्यक्त किया गया है। आप सब बहुत जिज्ञासा से इस बात को सुनना चाह रहे हैं, ऐसा मेरा स्वीकृति है।

मैं इस बात को बहुत अच्छी तरह से परखा हूँ, किसी आयु के बाद हर व्यक्ति - चाहे नर हो या नारी हो - अपने आप को "समझदार" मानता ही है। अभी तक की सोच से कुछ ऐसा निकलता है - "पैसा पैदा कर सकने वाला समझदार है। पैसा पैदा नहीं कर सकने वाला समझदार नहीं है।" इसके पहले "बलशाली" को समझदार मानते रहे। उसके पहले "रूपवान" को समझदार मानते रहे। "बल" और "रूप" के आधार पर समझदारी को पहचानने की कोशिशों को आदमी नकार चुका है। लेकिन ज्यादा "धन"और "पद" अर्जन करने वाले को ज्यादा समझदार आज भी मानते रहे हैं। "धन" और "पद" एक दूसरे के पूरक हो गए। पद से धन, और धन से पद मिलने की बात हो गयी। रूप, बल, पद, और धन के आधार पर हम समझदारी को पहचान नहीं पायेंगे। यह हमारा निष्कर्ष निकला। मानव-चेतना पूर्वक जीना समझदारी है - यह निष्कर्ष निकला।

मानव-चेतना को मानव-परम्परा में लाने के लिए मैंने शिक्षा विधि को शोध किया। शिक्षाविदों को समझाने का कोशिश किया। वह कोशिश होते-होते आज छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा संस्थान इस प्रस्ताव को अध्ययन करने के लिए तैयार हो गया। वह बुद्धि, समय, और साधन लगा कर अध्ययन कर रहा है। यह आपको सूचना देना चाहा।

इस अध्ययन की क्या वस्तु है?

इस अनुसंधान के फलस्वरूप **"मानव व्यवहार दर्शन"** नामक पुस्तिका तैयार हुआ - जिसको "शोध-ग्रन्थ" भी कह सकते हैं। मानव-व्यवहार-दर्शन में मानव-चेतना विधि से व्यवहार का क्या स्वरूप होता है? न्याय का क्या स्वरूप होता है? इसका वर्णन है। उसको अध्ययन कराते हैं। "मानव व्यवहार दर्शन" में मानव के कर्तव्य और दायित्व को तय किया। मानव का कर्तव्य और दायित्व तय होना ज़रूरी है या नहीं है - इस पर आप ही निर्णय लीजिये। यह निर्णय लेना हर व्यक्ति का अधिकार है।

"मानव कर्म दर्शन" में मानव के करने-योग्य और न करने-योग्य कर्मो का विभाजन होता है। इसकी भी आवश्यकता या अनावश्यकता पर आप अच्छे से विचार कर सकते हैं। यदि यह हमारी आवश्यकता बनता है तो उसके लिए हम तत्पर हो ही जाते हैं। जिसकी आवश्यकता हम स्वीकार नहीं करते, उसके लिए हम तत्पर नहीं हो पाते हैं। **"मानव अभ्यास दर्शन"** में व्यवहार और व्यवसाय में अभ्यास कैसे करेंगे - इसका निर्धारण किया गया है।

"अनुभव दर्शन" में प्रमाणित होने के अधिकार को ज्यादा से ज्यादा स्पष्ट किया गया है।

इन चारों भागों की आवश्यकता है या नहीं है - इसको सभी परिशीलन कर सकते हैं, समझ सकते हैं, प्रमाणित कर सकते हैं।

दर्शन के बाद आता है - वाद। वाद में चारों अवस्थाओं के साथ कैसे हम जी पायेंगे - यह वर्णन किया है।

पहला - **समाधानात्मक भौतिकवाद।** भौतिक वस्तुएं कैसे समाधान के अर्थ में काम कर रहे हैं, इसका बोध कराते हैं।

दूसरा - **व्यवहारात्मक जनवाद**। मानव व्यवहार में जागृति को कैसे प्रमाणित करता है, इसका बोध कराते हैं। मानव का व्यवहार मानव के साथ न्याय, धर्म, और सत्य पूर्वक होता है। मानव का व्यवहार मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक होता है। इसको स्पष्ट किया है।

अनुभवात्मक अध्यात्मवाद में - अध्यात्म (व्यापक) में समाई सम्पूर्ण जड़-चैतन्य प्रकृति का हमको अनुभव होता है। फलस्वरूप मानव सह-अस्तित्व में सह-अस्तित्व को प्रमाणित करने वाला हो जाता है। पदार्थ न हो, केवल व्यापक वस्तु हो - उसका कोई अनुभव नहीं है। केवल पदार्थ हो, व्यापक न हो - तब भी मानव के अनुभव करने का कोई रास्ता नहीं है।

अनुभव के लिए प्रकृति और व्यापक वस्तु साथ-साथ में होना आवश्यक है। ज्ञान-अवस्था की प्रकृति ही व्यापक वस्तु को अनुभव करता है। फलस्वरूप परम-सत्य को प्रमाणित करता है। इसीको मैंने अनुभव किया है। उसी अनुभव के आधार पर ही पूरे बात को प्रस्तुत किया है।

उसके बाद आते हैं - "शास्त्र"। शास्त्र में पहला है - **मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान**। "चेतना" का मतलब है - ज्ञान। "संचेतना" का मतलब है - सत्य को प्रकट करने वाला ज्ञान। मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान में मानवीयता पूर्वक प्रमाणित होने वाले १२२ आचरणों को बताया गया है। इन आचरणों के आधार पर मानव व्यवस्था में जी पाता है।

व्यवहारवादी समाजशास्त्र में मानव-संचेतना के व्यवहार में प्रमाणित होने की बात है।

आवर्तनशील अर्थशास्त्र में उत्पादन के लिए नियोजित होने वाले प्राकृतिक-ऐश्वर्य के स्रोत को बनाए रखते हुए उत्पादन और विनिमय व्यवस्था के स्वरूप को बताया गया है।

इन सब की आवश्यकता है या नहीं - इसको आप शोध कर सकते हैं, समझ सकते हैं, स्वीकार सकते हैं, नकार भी सकते हैं। जो आपकी "इच्छा" हो - आप वही करिए। आप यही स्वीकारो - ऐसा मेरा कोई "आग्रह" नहीं है। किंतु है ऐसा ही! - ऐसा बताने की "धृष्ठता" कर रहे हैं। या "साहस" कर रहे हैं। या "अनुग्रह" कर रहे हैं। इन तीन में से जो आप स्वीकारें - वही ठीक है।

इस ढंग से दर्शन, वाद, और शास्त्र का प्रयोजन स्पष्ट हुआ। अभी तक हमारे साथ जितने भी लोग अध्ययन किए हैं - इसकी अत्यन्त आवश्यकता है, ऐसा मान कर स्वीकारे हैं। आगे यहाँ कैसे होगा, और जगहों पर कैसे होगा, धरती पर और राज्यों पर कैसा होगा - इसको आगे भविष्य बतायेगा। अभी छत्तीसगढ़ राज्य में जो स्वीकृति बनी है, वहाँ कहने लगे हैं - "इस प्रस्ताव को समझे बिना कोई आदमी के स्वरूप में जी नहीं सकता।" इसको लेकर यहाँ भी प्रयोग हो सकता है। और जगह में भी प्रयोग हो सकता है।

मानव-संचेतना पूर्वक मानव मानव के साथ न्याय-धर्म-सत्य पूर्वक प्रकट होता है और मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ नियम-नियंत्रण-संतुलन पूर्वक प्रकट होता है। नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, और सत्य - इन ६ भागों में हर समझदार

व्यक्ति प्रकट होता है। इसमें कोई "झगड़ा" करने की जगह है या नहीं - इसको हर व्यक्ति शोध कर सकता है, हर व्यक्ति समझ सकता है, हर व्यक्ति जी सकता है, हर व्यक्ति प्रमाणित हो सकता है। यह ऐसा "इच्छा" होने पर ही सम्भव है। जीव-चेतना में ही जिसके जीने की इच्छा हो - तो वह इस बात पर ध्यान भी नहीं देगा, इसको करेगा भी नहीं। "इच्छा" हो तो - हर व्यक्ति इस प्रस्ताव को समझ कर, जी कर प्रमाणित कर सकते हैं। "इच्छा" हो तो - आप इसको देख सकते हैं, अध्ययन कर सकते हैं। मेरी स्वीकृति है - यहाँ हम जितने भी लोग हैं, वे समझने के अर्थ में ही एकत्र हुए हैं, समझा हुआ को प्रकट करने के अर्थ में ही एकत्र हुए हैं।

इस प्रकार दर्शन, विचार, और शास्त्र जो तैयार हुए उसको शिक्षा में देने का स्वरूप दिया - "चेतना विकास - मूल्य शिक्षा"।

दर्शन, विचार, शास्त्र के साथ "मानवीय आचार संहिता स्वरूपी संविधान" लिख कर दिया। "मानवीयता पूर्ण आचरण" के स्वरूप के आधार पर यह संविधान लिखा। उसको भी आप लोग देख सकते हैं।
शिक्षा में इस विकल्पात्मक प्रस्ताव के "अध्ययन" की बात रहेगी।

अध्ययन का मतलब है - अधिष्ठान के साक्षी में, अर्थात अनुभव के साक्षी में स्मरण पूर्वक हम जो कुछ भी क्रिया करते हैं - वह सब का सब अध्ययन है।

अनुभव कहाँ रहता है? अध्ययन कराने वाले के पास रहता है। अध्ययन कराने वाले के अनुभव की रोशनी में हम जो कुछ भी सोचते हैं, समझते हैं, स्वीकारते हैं - वह सब का सब अध्ययन है।

अध्ययन कैसे कराते हैं?

यहाँ जितने भी लोग बैठे हैं, सभी को "पठन" करना आता है - ऐसा मैं मानता हूँ। पठन भर करने से काम नहीं चलता है। अध्ययन करना ज़रूरी है। अध्ययन के लिए प्रस्तावित किया है - हर शब्द का अर्थ होता है। अर्थ के स्वरूप में अस्तित्व में वस्तु होता है। अस्तित्व में वस्तु को हम समझ लेते हैं, तो हमने अध्ययन किया। वस्तु का साक्षात्कार होने से हम अध्ययन किया। यदि वस्तु का साक्षात्कार नहीं हुआ - मतलब हमने अध्ययन नहीं किया। यह बात स्पष्ट हुआ। इस प्रकार हमने अध्ययन किया या नहीं किया - उसको हर दिन हम सोच सकते हैं, समझ सकते हैं, स्वीकार सकते हैं, प्रमाणित कर सकते हैं।

यह कैसे होता है? कहाँ पर होता है? इसका उत्तर है - यह कल्पनाशीलता से होता है। हर व्यक्ति में - बच्चे से बूढ़े में कल्पनाशीलता समाई है। कल्पनाशीलता और कर्म-स्वतंत्रता के योगफल में "तदाकार-तद्रूप विधि" आती है। तदाकार-तद्रूप विधि से मनुष्य द्वारा अस्तित्व में वस्तु को पहचानना बनता है। तदाकार विधि से मनुष्य में वस्तु की पहचान होती है। तद्रूप विधि से मनुष्य प्रमाणित होता है। तद्रूप विधि से प्रमाण आत्मा (गठन-पूर्ण परमाणु का मध्यांश) में अनुभव होने के बाद है। इस विधि से अध्ययन कराते हैं।

यह अध्ययन हर मानव-संतान को स्वीकार होता है। इसका सर्वप्रथम प्रयोग बिजनौर में हुआ। वहाँ पाया - यह बात मानव-संतान को स्वीकार होता है। वहाँ अभिभावकों से हमने पूछा - "आप क्या चाहते हो, आपके बच्चे समझदार बन कर समझदारी पूर्वक जियें या नौकरी करें?" उसके उत्तर में ९०% अभिभावक कहे - "नौकरी करना चाहिए!" १०% लोग कहे - "नौकरी भी करना चाहिए, समझना भी चाहिए।"

उसके बाद अभी छत्तीसगढ़ में राज्य-शिक्षा के अधिकारियों और अध्यापकों के साथ हम एक कार्य-गोष्ठी किए। उस कार्य-गोष्ठी का मूल मुद्दा था - **"वेतन-भोगी क्या वास्तविक रूप में प्रमाणित हो सकता है या नहीं?"** इसका उत्तर मैंने दिया - वेतन-भोगी "प्रमाण" नहीं हो सकता। वेतन-भोगी दूसरा वेतन-भोगी को ही तैयार करेगा - दूसरा कुछ भी नहीं करेगा। प्रमाणित व्यक्ति ही प्रमाणित-व्यक्ति को तैयार करेगा। वेतन-भोगी "प्रेरक" हो सकता है। उस आधार पर वे लगभग १०० अध्यापक-गण वहाँ अध्ययन कर रहे हैं। उनको अध्ययन करते हुए २ महीना हो चुका है, तीसरा महीना पूरा होने वाला है। उनको अध्ययन कराने वाले दो व्यक्ति यहाँ इस सभा में ही बैठे हुए हैं।

मध्यस्थ-दर्शन के वांग्मय के मूल-प्रबंधों (दर्शन, वाद, शास्त्र) को स्नातक-कक्षा में पढ़ाने का सोचा जा रहा है। उसके पहले दसवीं कक्षा तक पाठ्य-पुस्तकों को तैयार किया जा रहा है। कक्षा-१ से कक्षा-५ तक की पाठ्य-पुस्तकों को तैयार करके राज्य-शिक्षा को दे दिया है - जिसको वे छपवाने के काम में लगे हैं। अगले वर्ष तक वह प्रभाव-शील हो जायेगी। इस ढंग से इस प्रस्ताव को शिक्षा में समावेश करने की एक प्रक्रिया चल रही है, अध्ययन चल रहा है, कार्य चल रहा है, प्रयत्न चल रहा है।

यह तो बच्चों तक इस बात को पहुंचाने की बात थी। अब सवाल आता है - बड़े-बुजुर्गों का क्या करोगे? उनको भी तो इस शिक्षा की जरूरत है। उसका उत्तर है - "लोक शिक्षा"। इस पूरी बात को "लोक-शिक्षा" विधि से हम बड़े-बुजुर्गों को विदित करायेंगे। विदित कराने का कार्यक्रम अभी शुरू नहीं किए हैं। वह एक आवश्यकता है।
अभी जितना बात आपको बताया, उसमें कोई शंका हो - तो आप मुझसे पूछ सकते हैं। मध्यस्थ-दर्शन को शिक्षा के स्वरूप में प्रस्तुत करने की विधि के बारे में जो कुछ भी मैंने बताया - उसको लेकर कुछ भी शंका हो तो आप मुझसे पूछ सकते हैं।

प्रश्न: इस ज्ञान के अर्थ में शिक्षा कब तक सम्भव हो पायेगी?

उत्तर: समझने पर सम्भव हो पायेगी। ज्ञान के आधार पर हमको जीना है या नहीं जीना है - उसको तय करिए। जीव-चेतना में समस्या पूर्वक जीना होता है। मानव-चेतना में समाधान-पूर्वक जीना होता है। आपको कैसे जीना है? - आप सोचिये। जीव-चेतना में समस्या के अलावा कुछ होता नहीं। मानव-चेतना में समाधान के अलावा कुछ होता नहीं। जो करना है, वही करिए।

धरती का बीमार होना मानव की करतूत से हुआ या और कोई भूत किया? इसको भी सोचिये। यदि आपको यह स्वीकार होता है यह मानव ने किया - तो आप यह भी स्वीकार सकते हैं कि मानव ने जीव-चेतना वश यह अपराध किया। इस बात को स्वीकारना या नहीं स्वीकारना आपके हाथ में है। इसमें मेरा कोई "आग्रह" नहीं है। जैसा आपका विचार हो - वैसा ही करिए।

"कब तक, कितनी देर में समझेंगे" वाली बात के उत्तर में - यह सब सकल कुकर्म करने में जिसमें धरती को बरबाद किया, उसमें इतना दिन लगा है। अब इस प्रस्ताव को पूरी शिक्षा में समावेश होने में भी कुछ समय तो लगेगा।

प्रश्न: "अध्ययन" और "अध्यापन" को समझाइये।

उत्तर: अध्ययन और अध्यापन संयुक्त रूप में होता है। अध्ययन करने वाले और अध्यापन कराने वाले के योग में अध्ययन होता है। (अध्यापक के) अनुभव की रोशनी में विद्यार्थी जितनी भी समझने की प्रक्रिया करते हैं - उसका नाम है "अध्ययन"। उसके समर्थन में बताया - हर शब्द का अर्थ होता है। अर्थ के स्वरूप में अस्तित्व में वस्तु होता है। वस्तु का साक्षात्कार होने से हम अध्ययन किए।

अध्ययन "तदाकार-विधि" से होता है। तदाकार कैसे होता है? हर व्यक्ति के पास कल्पनाशीलता और कर्म-स्वतंत्रता स्वत्व के रूप में रखा है। आज पैदा होने वाले बच्चे में भी, कल मरने वाले वृद्ध में भी। कल्पनाशीलता के प्रयोग से तदाकार होता है। चाहे जीव-चेतना में चोरी-डकैती का काम सिखाना हो - वह भी तदाकार विधि से सम्भव होता है। मानव-चेतना का न्याय-धर्म-सत्य समझाना हो - वह भी तदाकार-विधि से सम्भव होता है।
- बाबा श्री ए नागराज के उदबोधन पर आधारित (२ अक्टूबर २००९, हैदराबाद)

(पेज नंबर: 256)

http://madhyasth-darshan.blogspot.in/2009/10/blog-post_2746.html

शिक्षा-सन्दर्भ: संवाद भाग २

संवाद वाद – II (अध्याय:, संस्करण:2013,पेज़ नंबर-)

- ## शिक्षा में विकल्प

जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

मैं स्वयं को अपने बंधुओं के बीच पा कर प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। आप हम जो यहाँ मिले हैं यह एक संयोग और सद्बुद्धि की बात है। सद्बुद्धि के पक्ष में आगे बढ़ने का यहाँ प्रस्ताव है। सद्बुद्धि के पक्ष में आगे बढ़ने का प्रस्ताव है। सद्बुद्धि चाहने वाले यहाँ सब बैठे हैं ऐसा मेरा स्वीकृति है। कल आपके साथ बात हुई थी विकल्प कैसे आया, क्यों आया और यह किस बात का विकल्प है? उसमे बताया था यह आदर्शवाद और भौतिकवाद का विकल्प है और समाधि संयम विधि से निष्पन्न हुआ है। अब आगे इसका शिक्षा में क्या स्वरूप होगा। उसको मुझे प्रस्तुत करने को कहा गया है। उसको मैं स्वीकारा हूँ उचित समझ हूँ। आप लोग भी उसको उचित समझते हैं ऐसा मेरा विश्वास है।

वेद विचार में 30 वर्ष तक जो मैं पला बढ़ा, उसमें सुनने सुनाने को श्रुति नाम दिया। मैं भी उसको मान कर वैदिक ऋचाओं को उच्चारण करते रहा। मुझको जो लोग सुने रहे वे मेरी प्रशंसा करते रहे, उससे जो लोग सुनते रहे वे मेरी प्रशंसा करते रहे, उससे मुझे अभिमान होता रहा। जब वेद विचार के अर्थ में गए तो मैंने उसे निरर्थक पाया। पहले ब्रह्म को ही सत्य और अनंत बताया। दूसरे ब्रह्म से ही जीव जगत पैदा हुआ, यह बताया। तीसरे लाइन में लिखा ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या है। सत्य से मिथ्या कैसे पैदा हो गया? इस प्रश्न से मुझको पीड़ा हुई। जिसके नीरकरण के लिए मैंने स्वयं स्फूर्त विधि से अनुसंधान किया। उसके फल में जो पाया वह मुझे सम्पूर्ण मानव जाती की संपदा लगा इसलिए उसे मानव जाती को समझने के लिए मैंने प्रयास शुरू किया। यहाँ उपदेश विधि को छोड़ करके शिक्षा विधि से इसको प्रस्तुत शुरू किया। शिक्षा में उसके स्वरूप को बताने के लिए मैं यहाँ प्रस्तुत हूँ। शिष्टता से सम्पन्न होने के लिए शिक्षा है। उसके लिए प्रक्रिया है अध्ययन। अनुभव के प्रकाश में स्मरण पूर्वक किया गया क्रियाकलाप अध्ययन है।

अध्यापन करने वाले के पास अनुभव का प्रकाश (रौशनी, समझ) रहता है। अनुभव का प्रकाश लोहे के पास रहेगा, जानवर के पास रहेगा या मानव के पास रहेगा? मैंने यह निर्णय लिया अनुभव का प्रकाश मानव के पास रहेगा। इसको आप सभी शोध करने योग्य हैं। सभी को शोध करना चाहिए। निर्णय लेना चाहिए। मनुष्य ही मनुष्य को समझाएगा। न जानवर समझाएगा, न पत्थर समझाएगा , न मणि समझाएगा। इसमें यदि आप सहमत नहीं होते तो आप मुझसे प्रश्न कर सकते हैं, पूछने समझने और समझने के लिए पाँच ही सूत्र हैं। पहला है- सह अस्तित्व को समझना और समझाने योग्य होना। सह-अस्तित्व में अनुभव करने पर सह अस्तित्व समझ में आत है। उससे पहले सह अस्तित्व को समझ नहीं पाएंगे। मानव परंपरा अनुभवमूलक विधि से जिंदा रह सकता है। मानव परंपरा अनुभवमूलक विधि से जिंदा रह सकता है। मानव का सारी मानव जाति के साथ सह अस्तित्व, सारी जीव जाति के साथ सह अस्तित्व, सारी वनस्पति जाति के साथ सह अस्तित्व, सारी पदार्थ जाति के साथ सह अस्तित्व पूर्वक जीने की बात होती है।

इस धरती पर ही आप हम बैठे हैं हवा को लेते हैं, पानी को पीते हैं, वनस्पतियों और जीवों का उपयोग करते ही हैं। अब मानव का मानव को समझदारी के अर्थ में प्रबोधित करने की बात है। इसको समाधान पूर्वक और समृद्धि पूर्वक और समृद्धि पूर्वक जी सकने की बात कही है। इसको मैं स्वयं जी कर प्रमाणित हूँ। मैं किसी को घायल नहीं करता हूँ । किन्तु घायल करने वाले मानव धरती पर हूँ। जैसे यह प्रकाश जो इस बल्ब से है, जो बिजली है, वह धरती को घायल किए बिना आया नहीं है। धरती सूर्य के ताप को अपने में पचाए के लिए पहले कोयला बनाया, उसके बाद धरती अपने को अभी के संसार के जीने योग्य हवा आदि नैसर्गिकता को बनाया। उसके बाद ही जीव संसार प्रगत हुआ, मनुष्य संसार प्रगट हुआ। मानव अरण्य युग से जंगल को बर्बाद करने में लगा ही है। अत्याधुनिक विज्ञान के साथ मानव खनिज संसार पर टूट पड़ा, खनिज तेल, खनिज कोयला और विकिरणीय धातुओं के अपहरण करने से ही यह धरती बीमार हुई। इनके ईंधन अवशेष से ही धरती तापग्रस्त हो गई है।

अब धरती और कितने दिन बची रहेगी उसके लिए विज्ञानी लोग अपनी अपनी भविष्यवाणीयां कर रहे हैं। ये सब सुनने बोलने के लिए हमारा कोई विरोध नहीं है। हमारा अनुरोध इतना ही है हमारे बोलने सुनने से प्रयोजन सिद्ध होना चाहिए। प्रयोजन है मानव का व्यवस्था में जीना। व्यवस्था में जीने का मतलब है मानव का अपराध मुक्त होना, भ्रम मुक्त होना। सकारात्मक भाषा में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक जीना। दूसरे तरह से कहें समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व पूर्वक जीना। मानव का मानवत्व पूर्वक जीना, अर्थात मानव चेतना में जीना। शिक्षा में ये सभी सार्थकता का अध्ययन है। इसी के आधर पर आप इसका स्रवण करेंगे, उसमें कोई शंका हो तो हमसे पूछेंगे। उसका समाधान हमारे पास है।

अभयता

अभयता का मतलब है – विश्वास। मानव ही मानव के लिए भय का स्वरूप है, तथा मानव ही मानव के लिए विश्वास का स्वरूप है। परस्परता में विश्वास सबको स्वीकार होता है – ऐसा मेरा स्वीकृति है। मैंने डाकुओं, अपराधियों, व्यभिचारियों से भी इस बारे में बात किया – वे भी विश्वास के प्रति ही सहमत होते हैं। साधू, संत, यति-सती, योग्य, बुद्धिमान लोग तो विश्वास के प्रति पहले से ही सहमत है। मानव-जाति के साथ संपर्क से मैंने ऐसा पाया।

अत्याधुनिक-विचार हो या अर्वाचीन विचार हो – उसमे नाश करने की प्रवृत्ति बनी हुई है। पहले ऐसे सोचा गया था – यदि आपके पास में पत्थर हो तो दूसरा आप पर अपनी चलाएगा नहीं। पत्थर चल गया तो फिर सोचा गया - जिसके आपके पास डंडा हो, दूसरा आप पर अपनी चलाएगा नहीं। दूसरे ने डंडा चला दिया, तो फिर बन्दूक आ गया। फिर तोप आया, मिसाइल आया। ये सब कहाँ अंत होगा? समाधान पूर्वक जीने से ही नाश की प्रवृत्ति का अंत होता है। हमारे जैसे समाधान सबको हो सकता है। इसीलिये शिक्षा से समाधान की बात किया।

हमारे अनुसार - हर बच्चा जन्म से ही न्याय का याचक, सही कार्य-व्यवहार करने का इच्छुक, और सत्य-वक्ता होता है। जबकि अत्याधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार बच्चे जन्म से ही कामुक होते हैं। हम आदमी हैं, जानवर हैं, या भूत-प्रेत हैं? हम क्या सीख रहे हैं, क्या कर रहे हैं, क्या बोल रहे हैं? यह एक-दूसरे के लिए भ्रम फ़ैलाने की बात है या नहीं? यह एक सोचने का मुद्दा है।

शिष्टता पूर्वक जीने के लिए शिक्षा है। समाधान-समृद्धि-अभय-सह-अस्तित्व पूर्वक जीना ही शिष्टता है। समाधान समझदारी से आता है. समझदारी सह-अस्तित्व, सह-अस्तित्व में विकास-क्रम, विकास, जागृति-क्रम, और जागृति को समझने से होती है. इन पाँच सूत्रों को समझाने के लिए ४ दर्शन, ३ वाद, ३ शास्त्रों, और संविधान को लिखा. यह कुल ३६०० पेज हैं। इससे ज्यादा मुझे कुछ लिखना नहीं है। यही शिक्षा/अध्ययन की वस्तु है। लोकव्यापीकरण होने पर जीने की जगह इन पाँच सूत्रों में ही है। उसका व्यवहार रूप बहुत विस्तार में है। अभी हम बहुत ज्यादा भाषा का प्रयोग करते हैं, थोडा समझा पाते हैं। लोकव्यापीकरण क्रम में आगे चल कर थोड़ी भाषा में ज्यादा समझाना बन जाएगा। ये भविष्य के लिए आशा है।

पूरा इसको लिखने के बाद मैंने यह निर्णय किया – जो इसको समझना चाहते हैं, उनके पास इसको जाना चाहिए। उससे समझने वालों को खोजना शुरू किया। धीरे-धीरे लोगों की इसमें स्वीकृति और प्रयासों से शिक्षा के इस स्वरूप पर हमारा विश्वास हुआ। अखंड-समाज होने के लिए इस शिक्षा का सारे विश्व में लोकव्यापीकरण होना होगा। एक गाँव में हर परिवार यदि समाधान-समृद्धि पूर्वक जीता है तो यह व्यवस्था का एक प्रारूप बनता है। गाँव में ऐसे सबको बनाने का दायित्व अध्यापकों का है. हर गाँव में अध्यापक होंगे ही। हर गाँव में अध्यापक बच्चों को पढायेंगे, और बड़ों को समझायेंगे। यह ज़रूरत है या नहीं? गाँव में सभी समझदार होने पर ग्राम-स्वराज्य व्यवस्था की शुरुआत होती है।

हर परिवार में इस तरह सभ्यता और संस्कृति का धारक-वाहकता होता है। और परिवार-सभा में विधि और व्यवस्था की धारक-वाहकता होती है। परिवार और परिवार-सभा में इस तरह पूरकता का अंतर-सम्बन्ध है। हर नर-नारी यदि समझदार होते हैं, तो परिवार में ही न्याय होता है। परिवार-सभा में श्रम-विनिमय के सामान्यीकरण की व्यवस्था होती है।

अकेले परिवार में ही आधा मानव-लक्ष्य (समाधान और समृद्धि) प्रमाणित हो जाता है। इसको आप वर सकते हैं, प्रयोग कर सकते हैं, प्रमाणित कर सकते हैं। तुरंत प्रमाणित करने का क्षेत्र परिवार ही है. धीरे-धीरे प्रमाणित करने वाली जगह अखंड-समाज है। अखंड-समाज होता है तो सार्वभौम-व्यवस्था होती ही है। सर्व-देश में यदि समझदारी आती है तो सार्वभौम-व्यवस्था होती है। सार्वभौम-व्यवस्था होना ही अंतिम मंजिल है। इस ढंग से हम एक अच्छी बात के लिए तुल सकते हैं, अच्छी बात के लिए जोर लगा सकते हैं, अच्छी बात के लिए समर्पित हो सकते हैं, हम स्वयं को प्रमाणित कर सकते हैं।

जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- बाबा श्री ए नागराज के जीवन-विद्या राष्ट्रीय सम्मलेन २०१० में उदबोधन पर आधारित

(पृष्ठ- 24-29)

http://madhyasth-darshan.blogspot.in/2011/05/blog-post_4318.html

- **प्रचलित-शिक्षा का विकल्प**

अभी की प्रचलित-शिक्षा कामोंमादी, भोगोंमादी, और लाभोंमादी है। जबकि हर अभिभावक - चाहे डाकू हों, दरिद्र हों, समर्थ हों, असमर्थ हों - चाहते हैं उनके बच्चे नैतिकता पूर्ण बने, चरित्रवान बनें। आप स्वयं सोचिये – इन तीनो उन्मादों को पाते हुए क्या बच्चे नैतिक बन सकते हैं, चरित्रवान बन सकते हैं? इस ढंग से हम अभी तक क्या किये, किस बात के लिए भागीदारी किये – इसका मूल्याँकन होने लगता है। इस मूल्याँकन के होने के बाद हम विकल्पात्मक स्वरूप में जीने के लिए तैयार होते हैं। विकल्पात्मक स्वरूप है – सह-अस्तित्व में जीना. विकल्पात्मक शिक्षा के स्वरूप के बारे में हम आगे चर्चा करेंगे।

सह-अस्तित्व में स्वयम जीने के स्वरूप को लेकर विकल्पात्मक-शिक्षा की शुरुआत करते हैं। सह-अस्तित्व में स्वयं जीने के लिए जब पारंगत हो जाते हैं, तो उसके सत्यापन को हम इस विकल्पात्मक-शिक्षा की पूर्णता मानते हैं। इसके उपरान्त समाधान-समृद्धि पूर्वक जीने, अन्य लोगों की सहायता करने, और उपकार करने की शुरुआत होती है। आगे पीढ़ी में पिछली पीढ़ी से और अच्छा करने तथा अच्छा प्रस्तुत होने की कल्पना रहता ही है। अभी की अपराध-परंपरा में भी इस को देखा जा सकता है। मानव ने अपराध की शुरुआत जंगल को विनाश करने और हिंसक पशुओं का वध करने के रूप में की। उनकी संतान और ज्यादा विनाश करने, और ज्यादा वध करने की ओर गयी। यह चलते-चलते लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद तक पहुँच गया। अभी प्रचलित व्यापार-शिक्षा में लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद ही मिलता है। इसके अलावा दूसरा कुछ उसमे पा ही नहीं सकते। इसके अलावा उस शिक्षा में कोई ध्वनि ही नहीं है, सूत्र ही नहीं है, न व्याख्या है। यहाँ बैठे कुछ लोग नौकरी करते हुए भी हैं, व्यापार करते हुए भी हैं। वे सभी सोच सकते हैं, ऐसा ही है या नहीं? यदि मैं जो कह रहा हूँ वास्तविकता उससे भिन्न कुछ है तो उसको आप मुझे सुझाव के रूप में दे सकते हैं, आग्रह के रूप में दे सकते हैं – कैसे भी दीजिए, वह सब स्वागतीय है।

अभी मानव बहु-रुपिये जैसा जीता है. समझदारी पूर्वक मानव एक निश्चित आचरण (मानवीयता पूर्ण आचरण) के साथ जीता है। क्या इस बात से किसी का विरोध है, असहमति है? यह जीव-चेतना और मानव-चेतना का विश्लेषण है। इस विश्लेषण के आधार पर मनुष्य पुनर्विचार करने का अधिकार प्राप्त करता है। पुनर्विचार कि – अपराध-मुक्ति कैसे हो? गलतियों से मुक्ति कैसे हो? भ्रम से मुक्ति कैसे हो? दरिद्रता से मुक्ति कैसे हो? पुनर्विचार के लिए सुझाव है – सह-अस्तित्व-वादी विधि से इन सभी मुद्दों का समाधान प्राप्त कर सकते हैं। जिससे अपराध-मुक्त हो सकते हैं, गलतियों से मुक्त हो सकते हैं, भ्रम से मुक्त हो सकते हैं,दरिद्रता से मुक्त हो सकते हैं।

- बाबा श्री ए नागराज के जीवन-विद्या राष्ट्रीय सम्मलेन २०१० में उदबोधन पर आधारित

(पृष्ठ- 31)

http://madhyasth-darshan.blogspot.in/2011/05/blog-post_02.html

श्रद्धेय श्री ए. नागराज जी द्वारा दिया गया पाठ्यक्रम

मूल्यांकन : चेतना विकास व मूल्य शिक्षा संबन्धित वस्तु मानवीय आचरण

कक्षा -1

शिक्षा पाठ	शिक्षा वस्तु	शिक्षा नीति	शिक्षा वस्तु	शिक्षा पाठ
शरीर, अवयव, मानवीय गुण, स्वभाव, संबंध, कर्तव्य, दायित्व, आवश्यकता, उपयोगिता एवं प्रयोजन नियतिवादी शब्दों के साथ जैसे –अभय करुणा आदि। अधिकाधिक सम्बन्धों में वर्तने वाले शब्दों की सूचना जैसे –अभय रहना, आदर करना, इंगीत करना, उदय होना, इतिहास बनाना।	अक्षर बोध	कक्षा 1 से 5 तथा आज्ञा पालन पद्धति रहेगी। मूल्य – 1) धीरता 2) वीरता 3) उदारता	संख्या बोध	शरीर इंद्रिय संबंध सहित संख्या बोध कराना जैसे- पाँच उंगली, पाँच इंद्रीय आदि, तीन मानवीय मूल्यों आदि के द्वारा।

मूल्यांकन : पुस्तक ही को सुरक्षा व सदुपयोग का किया गया प्रबोधन उसका आज्ञा पालन का मूल्यांकन।

कक्षा -2

संबंधो में वर्तने वाली चरित्र रूपी पाठ जैसे माता बच्चों के समय समय पर प्यार से सेवा करती है। बच्चे माँ का आज्ञा पालना करते हैं आदि। इसी प्रकार पिता और गुरु का आज्ञा पालन करने के संबंध में और माता-पिता और गुरु का आज्ञा पालन करने के संबंध में और माता-पिता और गुरु से मिलने से मिलने वाली सच्चरित्रवादी पाठ।	सम्बन्धों की पहचान, सम्बन्धों में वर्तने वाली चरित्र रूपी पाठ जैसे- माता बच्चों को समय –समय पर सेवा करती है। बच्चे माँ का आज्ञा पालन करते हैं आदि।	मूल्य-धीरता, वीरता, उदारता	वस्तुओं का सामान्य पहचान	पाठ्य सामग्रियाँ की पहचान उसकी उपयोगिता का बोध, धीरे धीरे पौधों की पहचान और उसका सामान्य उपयोग, इसी के साथ संख्या का विस्तार बोध जैसा वस्तुओं की संख्या घटाने-बढ़ाने के क्रम में पाठ।

मूल्यांकन: पुस्तिका सामग्री, स्थान की सुरक्षा और सदुपयोग आज्ञा का मूल्यांकन। कक्षा-3				
स्नेह, कृतज्ञता, विश्वास जैसा व्यवहारकारी वाक्य रचना जैसे-साथियों के साथ विश्वास, निर्वाह, गुरु, माता-पिता के साथ सम्बोधन कृतज्ञता का निर्वाह, भाई व बहन के साथ गौरव सम्मान का निर्वाह। सम्बन्धों में वर्तने वाली मूल्य और चरित्रकारी पाठ।	सम्बन्धों का सम्बोधन	मूल्य –धीरता, वीरता, उदारता	वस्तुओं की सामान्य उपयोगिता का प्रबोधन, का प्रवबोधन, उपयोग क्रम का पहचान।	विद्यार्थियों के उपयोग में आने वाली व्यवहार में आने वाली जैसा –पुस्तिका आदि। पाठ्य सामग्री, वस्त्र, आवास, अलंकार और वाहन आदि।

मूल्यांकन: वस्तुएँ सामग्री, वस्त्र, अलंकार, क्रम का सदुपयोग सुरक्षा और आज्ञा पालन पूर्ण व्यवहार का मूल्यांकन। कक्षा-4				
सम्बन्धों में वर्तने वाली व्यवहारवादी पाठ-जैसे समय के साथ कोई बीमार पड़ने पर, स्कूल जाने के साथ, किसी से मिलने के संबंध में भोजन, शयन के संबंध में पाठ आदि। मूल्य, चरित्र और नैतिकता का अविभाज्य, उसका नीति वर्तमानवादी पाठ जैसे – माँ विश्वासपूर्वक अधिकाधिक बच्चों को संरक्षण पोषण करने के रूप में चरित्र को अधकाधिक वस्तुओं को बच्चों के हित में सदुपयोग और उसकी रख-रखाव के रूप में सुरक्षा और नैतिकता का इत्यादि।	सम्बन्धों में वर्तने वाली चरित्र और व्यवहारवादी पाठ, कर्तव्यों का प्रबोधन	मूल्य- धीरता, वीरता, उदारता	वस्तुओं की सामान्य उपयोगिता का परिचय आवश्यकता का प्रबोधन	मनुष्येत्तर प्रकृति की पहचानने की क्षमता, प्रत्येक विद्यार्थी में होने की सत्यतों का पाठ जैसा जीव जानवर, पौधे, वृक्ष जलवायु, अग्नि आदि सभी प्रकृति का दृष्टा मनुष्य है।

मूल्यांकन: शिक्षा सामग्री, अलंकार व कक्षा समग्रियों की सुरक्षा सदुपयोग कार्य-व्यवहार का मूल्यांकन कक्षा 5				
व्यवहार संचेतना का स्पष्ट रूप जैसे माता-पिता, भाई-बहन, पिता-पुत्र, गुरु – शिष्य और मित्र सम्बन्धों में। वर्तमानकारी पाठ, वर्तमान के लिए प्रवर्तन। व्यवहार, संचेतना की अनिवार्यता जैसे – सह-अस्तित्व के लिए सहकारिता और सहभागिता की अपरिहार्यता कर्तव्य और दायित्व की पहचान जैसा उत्पादन कार्यों में कर्तव्य का व्यवहार कार्य सेवा में दायित्व की पहचान स्वीकृति के लिए प्रवर्तन उसकी वहन करने की आवश्यकता उपयोगिता तथा प्रयोजनियता पाठ।	सम्बन्धों में वर्तने वाली स्थापित मूल्य एवं शिष्ट मूल्यों का बोध परस्पर व्यवहार में वर्तने वाली चरित्र अर्थात मानव संचेता वादी चरित्र का पाठ।	मूल्य वीरता, धीरता, उदारता	वस्तुओं की आवश्यकता एवं उनकी उपयोगिता का बोध रासायनिक एवं भौतिक सीमा का ज्ञान।	भौतिक और रासायनिक परिवर्तन, प्राणावस्था से पदार्थावस्था, पदार्थावस्था से प्राणावस्था में परिवर्तनशील, रासायनिक एवं भौतिक सीमावर्ती प्रकृति का बोध मानव उसका दृष्टा होने का ऐश्वर्य सम्पन्न ईकाई के रूप में प्रबोधन।

मूल्यांकन: शाला कक्षा, सामग्री, शिक्षा, अलंकार समग्रियों की सुरक्षा व सदुपयोग, शाला और शाला से बाहर विद्यार्थियों का चरित्र चित्रण का मूल्यांकन। कक्षा-6				
कर्तव्य और दायित्व को वहनकारी पाठ जैसा उत्पादन की आवश्यकता, परस्पर सम्बन्धों में व्यवहार की अनिवार्यता। व्यवसाय और चरित्रकारी पाठ जैसा कृतज्ञता आदि स्थापित मूल्यों पूर्वक और शिष्ट मूल्यों सहित संबंधों के साथ वर्तने वाली पाठ चरित्र का आंकलन व्यवहार और व्यवसाय में प्रकाशित होने की तथ्यपूर्ण पाठ समाज के चारों आयाम जैसे- संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था का अविभाज्य वर्तमान का प्रबोधन।	सम्बन्धों को वर्तने वाली शिष्टता का पाठ, व्यवसाय मूल्य में अर्पित, समर्पित होने का पाठ।	मूल्य- वीरता, धीरता, उदारता व दया नोट- 6 वीं से 10 वीं कक्षा तक अनुशासनपूर्वक पाठ, पठन कार्य होगी।	प्राण व निष्प्राण कोशिकाओं का स्पष्ट ज्ञान, कोशिका परस्पर संगठित होने का गुण, उसी में अर्थात कोशिकाओं में समाहित रहने का स्पष्ट ज्ञान	पदार्थावस्था में निष्प्राण कोशिकाओं के रूप में होने की सत्यता को स्पष्ट करना, पदार्थावस्था का तात्पर्य मृद, पाषाण, मणि, धातु और उसके समस्त विकारों से है। पदार्थावस्था, विकसित होकर प्राणावस्था में होना और प्राणावस्था ह्रास होकर पदार्थावस्था में होने की यथार्थता को स्पष्ट करने वाली पाठ। उसकी साक्षी में वनस्पतियां ह्रास होकर पदार्थों में अर्थात मिट्टी आदि में परिवर्तित होता हुआ दिखाने, प्रत्येक बीज इसी मिट्टी, गोबर, हवा, पानी और उजालों को पाकर अंकुरित, पल्लवित एवं परिवर्तित होता हुआ दृष्टांतवादी पाठ।

मूल्यांकन: शाला और शालेय सामग्री, परिवार और पारिवारिक और पारिवारिक कार्य –व्यवहार, सामग्रियों का सदुपयोग व सुरक्षा अनुशासन। कक्षा-7				
धीरता, वीरता, उदारता और दया की पहचान जैसे प्रत्येक व्यवसाय व व्यवहार कार्य और सेवा की दृढ़ता के रूप में धीरता को। ऐसी दृढ़ता से विचलित व्यक्ति को दृढ़ता प्रदान करने के रूप में वीरता को, स्वयं की सुविधाओं को आवश्यकतानुसार दूसरों को प्रदान कर प्रसन्न होने के स्वरूप में उदारता को प्रवर्तित करने वाली पाठ और प्रवर्तन जीवन शक्तियों का सामान्य परिचय जैसे मन में होने वाली आशा, वृत्ति में होने वाली तुलन, चित्त में होने वाली चित्रण, बुद्धि में होने वाली संकल्प और आत्मा में होने वाली अनुभूति।	मानव मूल्य का परावर्तन ही स्थापित मूल्य और शिष्ट मूल्य में परावर्तित होने का प्रबोधन	मूल्य –वीरता, धीरता, उदारता दया।	परमाणु की पहचान, गठनपूर्वक परमाणु होने की पहचान, एक से अधिक परमाणुओं से रचना, अणु अणुओं से रचित पदार्थ पिंड की पहचान।	परमाणु में विकास होना ही सत्यता का पाठ, प्रत्येक परमाणु गठनपूर्वक परमाणु में एक से अधिक अंशों का गठन होने की सत्यता का स्पष्ट स्वरूप, प्रत्येक परमाणु में मध्यांश और उसके आश्रित अंश होने की सत्यता का पाठ। जो जिससे बना रहता है अर्थात रचनाए होती हैं। वह उससे अधिक नहीं होती है। इस सिद्धान्त पर प्राण कोशिकाएं और निष्प्राण कोशिकाओं की रचना का पाठ प्रबोधन और कर्माभ्यास विचार शक्तियों का परावर्तन में व्यवसाय अर्थात उपयोगिता एवं कला मूल्यों को स्थापित करने का पाठ।

मूल्यांकन: शाला और शालेय सामग्रियों का सदुपयोग व सुरक्षा परिवार, संपर्क एवं गुरुजनों के साथ किए गए व्यवहार का मूल्यांकन। कक्षा- 8				
मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि और आत्मा जैसे अक्षय बल और आशा, विचार, इच्छा, संकल्प और अनुभव प्रमाण जैसी अक्षय शक्तियों संयुक्त स्वरूप जीवन शक्तियों का परावर्तन एवं प्रत्यावर्तन की विशालता, आवश्यकता, उपयोगिता व प्रयोजनीयता का पाठ। देखना ही समझना, समझना ही देखना, सिद्धान्त के आधार पर पहचान क्षमता और उसकी अक्षयता का पाठ। अक्षयबल और अक्षय शक्तियों का संयुक्त स्वरूप ही संचेतना होने का पाठ। संज्ञानशीलता और संवेदनशीलता का संयुक्त प्रभावशीलन ही जीवन का परावर्तन और प्रत्यावर्तन होने का पाठ। समाज के चारों आयाम और जीवन के चारों आयाम के संबंध में व्यवहारिक पाठ।	जीवन की पहचान जीवन की जागृति की पहचान	मूल्य –धीरता, वीरता, उदारता, दया।	परमाणु में गठनपूर्ण होने ही सत्यता का पाठ	मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ संतुलित संबंध की पहचान, व्यवसाय ही अनिवार्यता व्यवसाय पद में मनुष्य ही विशेषता व्यवसायकर्ता दृष्टा और निर्माता मनुष्य ही होने ही वैभव का पाठ, मनुष्य मनुष्येत्तर प्रकृति का ज्ञाता होने के मूल कारण में चैतन्य इकाई होने का पाठ। चैतन्य इकाई गठनपूर्णता से सम्पन्न एक परमाणु होने की पाठ, विचार शक्ति ही व्यवसाय पूर्वक मनुष्येत्तर प्रकृति में उपयोगिता मूल्य और कला मूल्य को (निपुणता और कुशलतापूर्वक) स्थापित करने की व्यवस्था का पाठ। उसकी अनिवार्यता का प्रबोधन।

मूल्यांकन: गाँव, मोहल्ला, शाला परिवार में किया गया व्यवहार और चरित्र का मूल्यांकन, शालेय एवं शाला परिसर परिवारीय वस्तुओं का सदुपयोग व सुरक्षा का मूल्यांकन। कक्षा- 9				
चैतन्य शक्तियाँ अर्थात आशा, विचार, इच्छा, संकल्प और अनुभूतियों, शरीर के द्वारा प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ जैसा, चैतन्य शक्तियों का संकेत मेधस में होना, मेधस के द्वारा सम्पूर्ण शरीर का संचालित होना, फलत: कार्य व्यवहार संपादित होने का जो यथार्थ है उसे स्पष्ट करने का पाठ। अधिक गति और शक्ति, कम गति और शक्ति के माध्यम से प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ। संचेतन का परिष्कृत कम में मानव संचेतना का स्वरूप और न्यायपूर्ण व्यवहार का आधार होने का पाठ, समाज मूल्यों का निर्वाह ही न्यायिक होने का पाठ। और न्यायिकता ही दायित्व होने का पाठ। जीवन का परिचय, जीवन मूल्य का परिचय, जीवन मूल्य के अर्थ में मानव मूल्य, मानव मूल्य के अर्थ में व्यवहार मूल्य , व्यवहार मूल्य के अर्थ में व्यवसाय मूल्य सार्थक होना ही सदुपयोग और सुरक्षा होने का तथ्यपूर्ण पाठ, तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग यही धर्मनीति समाजगति होने की तथ्य का पाठ फलत: तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा ही नैतिकता होना, यह चरित्र और मूल्य से अविभाज्य होना यह तथ्य का प्रबोधन।	मनुष्य जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति का संयुक्त साकार रूप में होने का पाठ। न्यायपूर्ण जीवन कार्य व्यवहार विन्यास का प्रबोधन।	मूल्य – धीरता, वीरता, उदारता, दया।	चैतन्य इकाई मूलत: एक परमाणु होने के कारण परमाणु स्थापन-विस्थापन से मुक्ति ही गठनपूर्णता का अर्थ होने के कारण गठन पूर्ण इकाई में अक्षुण्णता स्वयं सिद्ध हो जाते हैं।	गठनपूर्ण परमाणु की (चैतन्य इकाई) रचना उसकी सीमा, उसकी पहचान उसकी अक्षयशीलता का पाठ। सम्पूर्ण रचनाएँ यांत्रिक होने का तथ्य, यांत्रिक अक्षयशील होने का तथ्य, सम्पूर्ण यांत्रिक क्रिया का दृष्टा, सृष्टा और कर्ता का स्वरूप मनुष्य होने ही सत्य का प्रतिपादन, मनुष्य संचेतनाशील होने का तथ्य, वह संचेतनापूर्वक ही उक्त सभी कार्य को संपादित करने का तथ्य, अक्षय बल, अक्षय शक्तियों का संयुक्त रूपी संचेतना होने के कारण। संज्ञानशीलता व संवेदनशीलता का सिद्ध होने का पाठ, संचेतना के अभाव में दृष्टापद अर्थात अनुभव ही प्रमाण परम होने ही पाठ।

मूल्यांकन: तन, मन, धन, रूपी अर्थ की सुरक्षा और सदुपयोग, संबंधों में कृतकारिक व अनुमोदित व्यवहार व्यवसाय के प्रति कर्तव्य की जागृति मूल्यांकन कक्षा- 10				
विवेक की परिभाषा और इसकी आवश्यकता एवं प्रयोजनीयता का पाठ, बौद्धिक नियम, सामाजिक नियम और प्रकृतिक नियम का पाठ, मूल प्रवृत्तियों के स्पष्ट स्वरूपों का प्रबोधन, आवेशित गति और स्वभाव गति का प्रबोधन, जीवन की अविरित क्रियाशीलता और उसका लक्ष्य का बोध, शक्तियों का परावर्तन, प्रत्यावर्तन के फलस्वरूप जीवन कृति की नित्य अभीष्ट की पहचान, राष्ट्र चेतना और समाज संचेतना का अविभाज्य वर्तमान का पहचान समाज का सार्वभौम अभीष्ट जैसा समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व का पहचान। जीवन तृप्ति का पहचान जैसा समाधान व प्रमाणिकता, प्रमाण और प्रामाणिकता, नित्य प्रबोधन उसकी निरंतरता, आवश्यकता, उपयोगिता और प्रयोजनियता का पाठ। समाज संचेतना के अर्थ में समाज संचेतना की पहचान जैसा व्यक्ति का परिचय समाज, राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय नित्य सामरस्यता का सूत्र प्रामाणिकता व समाधान होने का पाठ। अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था की सूत्र, व्याख्या। परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था- 5 आयाम दस सोपान। मनुष्य का चारों आयाम व्यवसाय, व्यवहार, विचार और अनुभूति में सामरस्यता का आधार प्रामाणिकता व समाधान होने की व्यवस्था का पाठ। जीवन सामरस्यता पूर्ण मनुष्य ही पूर्ण तथा सामाजिक होने का पाठ। सामाजिकता मूल्य और मूल्यांकन न्याय सुलभ एवं विनिमय सुलभ होने की व्यवस्था का पाठ। न्याय सुलभता व विनिमय सुलभतापूर्वक ही समाज का चारों आयाम, संस्कृति सभ्यता विधि व व्यवस्था में परिपूर्ण और उसका निरंतरता होने का पाठ।	जीवन की नित्यता और शरीर की नश्वरता का बोध व्यवहारिक जीवन के लिए आवश्यकीय नियमों का बोध।	मूल्य – धीरता, वीरता, उदारता , दया।	विकास के क्रम में चारों अवस्था की पहचान, चारों अवस्थाओं में विकास का क्रम संबंध	विज्ञान की परिभाषा समझकर ही आदमी देखता है, जैसा जिसको जो देखता है उसकी संपूर्णता उनके आँखों में नहीं आती, प्रत्येक ईकाई में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म, वर्तने का प्रबोधन। 1) आँखों में केवल रूप उसमें भी दो आयाम अर्थात रूप में आकार, आयतन, घन तीन आयाम होती है। उसमें से आकार, आयतन ही आँखों में आती है। आकार, आयतन में ज्यादा से ज्यादा 180 ° देखने में आता है, का पाठ। देखने से अधिक समझ प्रत्येक मनुष्य में होने का प्रबोधन। जो जितना जानता है वह उतना चाह नहीं पाता, जो जितना चाहता है वह उतना कर नहीं पाता, जो जितना करता है, यह उतना भोग नहीं पाता का पाठ। प्रत्येक रचना भौतिक और रासायनिक सीमा में सम्पन्न होने का पाठ, इन सबका दृष्टा जीवन होने का पाठ। 2) वस्तु स्थिति सत्य में देश काल दिशा। 3) वस्तु गत सत्य में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म का अध्ययन। 4) विज्ञान तकनीकी संबंधी उत्पादन कुशलता व निपुणता का प्रबोधन और कर्माभ्यास।

मूल्यांकन: व्यवहार में चरित्र अर्थात शिष्टता, व्यवसाय में कर्मण्यता तथा स्वानुशासनपूर्वक किया गया तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा का मूल्यांकन। कक्षा- 11				
मानवीयता की सीमा में मनुष्य अपव्ययों से मुक्ति होने तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा करने योग्य है का पाठ। मानवीयता की सीमा में मनुष्य संयत होने के कारण आवश्यकताएं सीमित होने की सत्यता का पाठ। मानवीयता की सीमा में मनुष्य संयत होने के कारण आवश्यकताएं सीमित होने की सत्यता का पाठ, मानवीयता की सीमा मनुष्य की आवश्यकताएं सीमित होने के कारण अधिक उत्पादन कम उपभोग योग्य होने की व्यवस्था का पाठ, प्रत्येक मनुष्य का अभीष्ट और लक्ष्य समन्वय और प्रामाणिकता होने की यथार्थ का पाठ।	मानवीयता ही मानव का स्वत्व होने का प्रबोधन, स्वत्व ही स्वतन्त्रता और अधिकार का आधार होने का प्रबोधन रहेगी।	मूल्य – धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा नोट-11वीं से 14वीं कक्षा तक स्वानुशासन व्यवस्था	विकास के क्रम में क्रिया पूर्णता और आचरण पूर्णता होने और उसकी निरंतरता होने की सत्यता का प्रबोधन	कारण, गुण, गणित पूर्वक निर्णय पाने की व्यवस्था का पाठ, आँखों में जितना देखने को मिलता है उससे अधिक समझ में आता है, का पाठ। जो जैसा है उसे वैसा समझना ही स्पष्ट समझ अथवा सार्थक समझ होने का प्रबोधन। स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य का प्रबोधन फलत: अस्तित्व कैसा है, का पाठ साथ ही कितना है की आवश्यकतानुरूप होने का पाठ। 1) स्थिति सत्य सत्ता में संपृक्त प्रकृति ही अस्तित्व सर्वस्व होने का पाठ।

मूल्यांकन: व्यवहार में चरित्र अर्थात शिष्टता, व्यवसाय में कर्माभ्यासिता तथा स्वानुशासनपूर्वक किया गया तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा का मूल्यांकन। **कक्षा- 12**				
गुणात्मक विकास अमानवीयता से मानवीयता से अतिमानवियता की ओर। विकास के इतिहास में तीन व चार पद जैसा प्राणपद, स्तरों में प्रकाशित होने की सत्यता का पाठ। परिष्कृत चेतना ही मानव संचेतना होने, मानव संचेतना ही संज्ञानशीलता और संवेदनशीलता का संतुलित होने का पाठ। संचेतना ही जागृत, अर्धजागृत, अल्पजागृत प्रभेदों में प्रकाशित होने की व्यवस्था का पाठ। जीवन जागृति ही जीवन का परम लक्ष्य होने का पाठ। जीवन जागृति आचरण पूर्णता और जागृति क्रम में ही क्रिया पूर्णता के व्यवस्था का पाठ। मानव संचेतना पूर्वक ही सह-अस्तित्व होने का पाठ। फलत: तन, मन, धनात्मक अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा सम्पन्न होने का पाठ। जीवन जागृति ही स्वानुशासन का जागृति की अपेक्षा ही अनुशासन का और जागृति का भास ही आज्ञा पालन का आधार होने का पाठ।	जीवन संचेतना के स्तरों का समरूप गुणात्मक परिवर्तन के क्रम में क्रिया व आचरण पूर्णता का प्रबोधन	मूल्य- 1-धीरता 2- वीरता 3- उदारता 4- दया, 5- कृपा 6- करुणा	सामान्य आकांक्षा व महत्वाकांक्षा की सीमा में वस्तुओं के निर्माण करने की आवश्यकता उसकी उपयोगिता व प्रयोजनियता का प्रबोधन।	उपयोगिता मूल्य व सुंदरता मूल्य, उपयोगिता आहार, आवास, अलंकार, दूरस्रवण, दूरगमन, दूरदर्शन के प्रयोजन होने का पाठ। उपयोगी वस्तुओं के निर्माण में विज्ञान और तकनीकी पूर्वक प्रबोधन और कुशलता निपुणता पूर्वक कर्माभ्यास।

मूल्यांकन: स्वानुशासन व उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन। कक्षा- 13				
सत्ता में संपृक्त प्रकृति अस्तित्व सर्वस्व। अस्तित्व न बढ़ती है अरूपात्मक अस्तित्व में ही सम्पूर्ण रूपात्मक अस्तित्व क्रियाशील है। सम्पूर्ण ईकाइयों की परस्परता में अरूपात्मक दिखाई पड़ती है। मूल्य स्वयं में जैसा विश्वास स्वयं में अरूपात्मक अस्तित्व है। विश्वासपूर्वक ही परस्पर मनुष्य सह-अस्तित्वशील है। मनुष्य ही मनुष्य का विकास और ह्रास का प्रधान कारण है, जड़ चैतन्यात्मक प्रकृति सत्ता में नियंत्रित है। सत्ता ही व्यवसायकाल में नियम, व्यवहारकाल में न्याय, विचार काल में समाधान, अनुभवकाल में सत्य के नाम से जाना जाता है का प्रबोधन का पाठ। शिक्षा प्रदान करने के लिए योग्यतानुसार उचित कक्षाओं में अवसर प्रदान करने की व्यवस्था का पाठ और अभ्यास।	सत्य-सत्ता में संपृक्त प्रकृति, में गर्भित होने फलत: सत्य में अनुभूत होने पर्यंत विकास के लिए बाध्य होने का पाठ।	मूल्य- 1- धीरता 2- वीरता 3- उदारता 4- दया 5- कृपा 6- करुणा	मध्यस्थ क्रिया और मध्यस्थ शक्ति का प्रबोधन	प्रत्येक परमाणु के मध्य में स्थित अंश मध्यस्थ क्रिया होने का पाठ। मध्यस्थ क्रिया में ही मध्यस्थता शक्ति का नित्य प्रसारण होने का पाठ। प्रत्येक ईकाई सत्ता में संपृक्त होने के कारण ऊर्जामय फलत: आकर्षण विकर्षण वादी गति कार्य विन्यास प्रबोधन। आकर्षणवादी कार्य विन्यास ही अंशों को परमाणु में गठित होने, परमाणुवें, अणुवें, कण और कई कण का संयुक्त स्वरूप, संगठित पदार्थ पिंड के रूप में होने का पाठ चाहे प्राण कोशिकाएं हो या निष्प्राण कोशिकाएं। यह सभी रसायनिक भौतिक सीमा में होने और जड़ चैतन्य का संयुक्त आकार मनुष्य इस सबका दृष्टा होने का पाठ तथा सम्पूर्ण माप दंड का निर्माण मनुष्य होने का पाठ। उत्पादन कम में विज्ञान व तकनीकी पूर्वक कुशलता निपुणतावादी पद्धति से कर्माभ्यास।

मूल्यांकन: स्वानुशासन तथा उत्पादन क्षमता का मूल्यांकन व शिक्षित करने का पाठ। कक्षा- 14				
मध्यस्थ क्रिया मध्यस्थ शक्ति के आधार पर सम विषम का संतुलित होने का पाठ। प्रत्येक आवेश सामान्य होने की स्थितियों का पाठ। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य आवेशित गतियाँ मूल प्रवृत्तियाँ न होने का पाठ, मूल प्रवृत्तियाँ जीवन का ऐश्वर्य होने का पाठ। मनुष्य में मूल प्रवृत्तियाँ असंग्रह स्नेह, विद्या, सरलता और अभय (विश्वास) का पाठ, परिष्कृत जीवन संचेतना में इन सभी मूल प्रवृत्तियाँ वर्तमान होने का पाठ। विकास, विकास का इतिहास जीवन घटना, जीवन, जीवनी क्रम में जीवन जागृति का कार्यक्रम ही जीवन का कार्यक्रम होने का पाठ। प्रमाण ही पाठ, पाठ ही प्रबोधन की वस्तु, प्रबोधन ही समाधान के रूप में बोध होने का पाठ।	समाधानात्मक भौतिक व व्यवहारात्मक जनवाद, अनुभावात्मक, अध्यात्मवाद का पाठ।	मूल्य – 1- धीरता 2- वीरता 3- उदारता 4- दया 5- कृपा 6- करुणा	अस्तित्व की स्थिरता विकास व जागृति की निश्चयता का पाठ।	सत्ता में संपृक्त प्रकृति ही अस्तित्व सर्वस्व अस्तित्व कैसा है? सिद्ध हो जाता है। और अस्तित्व कितना है कि आवश्यकता सिद्ध नहीं होती। आवश्यकता उपयोगिता और प्रयोजनियता के अर्थ में ही पहचान होती है। सत्ता अरूपात्मक अस्तित्व, संपृक्त प्रकृति रूपात्मक अस्तित्व, प्रकृति अनंत इकाइयों का समूह है। किसी भी एक ईकाई का नाश नहीं होती। सत्ता में संपृक्त प्रकृति सत्ता में अनुभव पर्यंत विकास के लिए बाध्य है। विकास स्वयं में क्रम है। क्रम स्वयं में नियति है।नियति स्वयं व्यवस्था है। सत्ता में सम्पूर्ण प्रकृति नियंत्रित है। नियम ही न्याय, न्याय ही धर्म, नियंत्रित है। नियम ही न्याय, न्याय ही धर्म, धर्म ही सत्य, सत्य ही ईश्वर, ईश्वर ही आनंद है। आनंद ही जीवन है। जीवन ही नियम है।

मूल्यांकन: स्वानुशासन उत्पादन क्षमता और शिक्षा प्रदान करने की अर्थात आज्ञा पालन कराने की क्षमता का मूल्यांकन।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा का लघु प्रस्ताव

127 पाठ्यक्रम मुद्दों के आधार पर

यह प्रस्ताव अभ्युदय {सर्वतोमुखी समाधान के अर्थ में } के संदर्भ में है, जिसका प्रत्यक्ष रूप प्रतिभा एवं व्यक्तित्व का संतुलित उदय है। यह आपकी स्वीकृति हेतु प्रस्तुत है।

मानवीय शिक्षा नीति का आधारभूत मध्यस्थ दर्शन, विकास के क्रम में वास्तविकताओं के आधार पर नि:सृत जीवन दर्शन है जिसमें द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के स्थान पर समाधानात्मक भौतिकवाद, संघर्षात्मक जनवाद के स्थान पर व्यवहारात्मक जनवाद, रहस्यात्मक अध्यात्मवाद के स्थान पर अनुभवात्मक अध्यात्मवाद प्रतिपादित हुआ है। इसी में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक-राज्यनिती का विश्लेषण है। यह भौतिक समृद्धि एवं बौद्धिक समाधान को बोधगम्य एवं हृदयंगम कराता है। जिसके लिए मानव में चिर प्रतीक्षा रही है। यही “विकल्प” है।

इस प्रस्ताव के संबंध में आपके द्वारा उठाए गए कदम एवं की गई प्रक्रिया की जानकारी अविलंब प्रदान कर अनुग्रहित करें।

भवदीय

ए. नागराज शर्मा

अमरकंटक

मानवीय शिक्षा-नीति का प्रारूप

1. **आधार –**

1.1 यह प्रारूप मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्व वाद) पर आधारित है। यह दर्शन चार भागों में है-

1. मानव व्यवहार दर्शन
2. मानव कर्म दर्शन
3. मानव अभ्यास दर्शन
4. मानव अनुभव दर्शन

2. मानवीय शिक्षा प्रवर्तन कारण-

2.1 वर्तमान में मनुष्य में पाई जाने वाली सामाजिक (धार्मिक), आर्थिक एवं राजनैतिक विषमताएं ही समरोन्मुखता का कारण है।

3. प्रस्तावना-

जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तन

3.1 मानवीयता की सीमा में धार्मिक (सामाजिक), आर्थिक, राज्यनैतिक समन्वयता रहेगी, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य प्राप्त अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा चाहता है। अस्तु अर्थ की सदुपयोगात्मक नीति ही धर्म नीति, सुरक्षात्मक नीति ही राज्यनीति है और साथ ही अर्थ के सदुपयोग के बिना सुरक्षा एवं सुरक्षा के बिना सदुपयोग सिद्ध नहीं है। इसी सत्यतावश मानव धार्मिक, आर्थिक, राज्यनैतिक पद्धति व प्रणाली से सम्पन्न होने के लिए बाध्य है।

4. उद्देश्य-

4.1 मानवीय चेतनवादी शैली को स्थापित करना।

4.2 मानवीयता की अक्षुण्णता हेतु मानवीय संस्कृति, सभ्यता तथा उसकी स्थापना एवं संरक्षण हेतु विधि व व्यवस्था का अध्ययन पूर्वक प्रमाणित कराना है इससे मनुष्य के चारों आयामों (व्यवसाय, व्यवहार, विचार एवं अनुभूति) तथा पाँचों स्थितियों (व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं अंतर्राष्ट्र) की एक सूत्रता, तारतम्यता एवं अनन्यता प्रत्यक्ष हो सकेगी। फलस्वरूप समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद एवं अनुभवात्मक अध्यात्मवाद मनुष्य जीवन में चरितार्थ एवं सर्वसुलभ हो सकेगा। यही प्रत्येक मनुष्य की प्रत्येक स्थित में बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि है और साथ ही यह मानव का अभीष्ट भी है।

4.3 व्यक्तित्व एवं प्रतिभा के संतुलित उदय को पाना।

4.4 समस्त प्रकार की वर्ग भावनाओं को मानवीय चेतना में परिवर्तन करना।

4.5 सहअस्तित्व एवं समाधानपूर्ण सामाजिक चेतना को सर्वसुलभ करना।

4.6 प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही न्याय का याचक है एवं सही करना चाहता है। उसे न्याय प्रदायी क्षमता तथा सही करने की योग्यता प्रदान करना।

4.7 प्रत्येक मनुष्य जीवन में अनिवार्यता एवं आवश्यकता के रूप में पाये जाने वाले बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि की समन्वयता को स्थापित करना।

4.8 शिक्षा प्रणाली, पद्धति एवं व्यवस्था की एक सूत्रता को मानवीयता की सीमा में स्थापित करना।

4.9 प्रकृति में विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति एवं इतिहास के आनुषंगिक मनुष्य, मनुष्य जीवन लक्ष्य, जीवन में समाधान तथा जीवन के कार्यक्रम को स्पष्ट तथा अध्ययन सुलभ करना।

4.10 विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय, शाला एवं शिक्षा मंदिरों की गुणात्मक एकता एवं एक सूत्रता को स्थापित करना।

4.11 उन्नत मनोविज्ञान के संदर्भ में निरंतर शोध एवं अनुसंधान व्यवस्था को प्रस्थापित करना।

4.12 प्रत्येक विद्यार्थी और व्यक्ति को अखंड समाज के भागीदार के रूप में प्रतिष्ठित करना।

4.13 शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अभिभावक की तारताम्यता को व्यवहार शिक्षा के आधार पर स्थापित करना।

4.14 विगत वर्तमान एवं आगत पीढ़ी की परंपरा के प्रतीक स्तर में तारताम्यता, एकसूत्रता, सौजन्यता, सहकारिता, दायित्व तथा कर्तव्यपालन योग्य क्षमता का निर्माण करना।

4.15 मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि एवं व्यवस्था संबंधी शिक्षा को सर्वसुलभ बनाना।

4.16 प्रत्येक मनुष्य में अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग योग्य क्षमता को प्रस्थापित करना।

4.17 व्यक्तित्व व प्रतिभा सम्पन्न स्थानीय व्यक्तियों के संपर्क में शिक्षार्थियों एवं शिक्षकों को लाने की व्यवस्था प्रदान करना।

5. कांक्षा

5.1 वर्तमान बिन्दु में वास्तविकताएं यह स्पष्ट करती है कि प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी न्यूनतम बुनियादी शिक्षा प्राप्त हो जिससे मानवीयता की सीमा में व्यक्ति की स्वतन्त्रता, स्वत्व, अधिकार, सामाजिक दायित्व एवं कर्तव्य क्षमता को स्थापित कर सके ताकि व्यक्तित्व और प्रतिभा का संतुलित उदय हो सके। इसके फलस्वरूप सामाजिक समानता, अधिक उत्पादन, कम उपभोग पूर्वक अर्थ विषम प्रभाव का उन्मूलन होगा और साथ ही प्रत्येक व्यक्ति सामाजिक अभ्युदय में भागीदार हो सकेगा।

6. नीति

6.1 शिक्षा प्रणाली एवं पद्धति राष्ट्रीय सीमावर्ती रहेगी।

6.2 जाति, वर्ग एवं संप्रदाय विहीन अखंड समाज को पाने के लिए सार्वभौमिक सामाजिक, (धार्मिक) आर्थिक एवं राज्यनैतिक नीति रहेगी।

6.3 नियति क्रम में पाई जाने वाली प्रकृति के विकास एवं इतिहास में मानव जीवन, जीवनीक्रम एवं जीवन के कार्यक्रम को अनुसरण करने वाली नीति रहेगी जो समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक अध्यात्मवाद पर आधारित है।

6.4 प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य के संपत्तिकरण नीति के स्थान पर साधनीकरण करने वाली नीति रहेगी।

6.5 ग्रामीण एवं शहरी जीवन की दूरी मिटाने वाली ग्रामीण जीवन में जो दयनीय भावनाएं है उसे समाप्त करने वाली एवं ग्रामीण जीवन के प्रति गौरव एवं अनिवार्यता को स्थापित करने वाली नीति रहेगी।

6.6 शिक्षा में औपचारिकता गौण रहेगी, उसके स्थान पर प्रतियोगिकता एवं व्यवहारिकता प्रधान शिक्षा नीति रहेगी।

7. वस्तु विषय प्रणाली

7.1 शिक्षा के सभी विषयों को सभी स्तरों में उद्देश्य की पूर्ति हेतु बोधगम्य एवं सर्व सुलभ बनाने, सार्वभौम नीतित्रय (धार्मिक, आर्थिक, राज्यनैतिक) में दृढ़ता एवं निष्ठा स्थापित करने तथा वर्तमान में पढ़ाये जाने वाले प्रत्येक विषय को समग्रता से संबद्ध रहने के लिए:-

क. विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का।

ख. मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष का।

ग. दर्शनशास्त्र के साथ क्रिया पक्ष का।

घ. अर्थशास्त्र के साथ प्रकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य की सदुपयोगात्मक एवं सुरक्षात्मक नीति पक्ष का।

ङ. राज्यनीति शास्त्र के साथ मानवीयता के संरक्षणात्मक तथा संवर्धानात्मक नीतिपक्ष का।

च. समाज शास्त्र के साथ मानवीय संस्कृति व सभ्यता पक्ष का।

छ. भूगोल और इतिहास के साथ मानव तथा मानवीयता का।

ज. साहित्य के साथ तात्विक पक्ष का अध्ययन अनिवार्य है क्योंकि इसके बिना इसकी पूर्णता सिद्ध नहीं होती।

7.2 इतिहास में उन मौलिक घटनाओं व प्रेरणाओं को वरीयता के रूप में अध्ययन करने की व्यवस्था रहेगी जो मानवीयता पूर्ण जीवन के लिए प्रेरणादाई होगी।

7.3 शिक्षा के द्वारा उस वस्तु एवं विषय का प्रबोधन किया जाएगा जिसका प्रत्यक्ष रूप व्यवहार एवं व्यवस्था होगी।

8. पद्धति

8.1 प्रयोग, व्यवहार एवं अनुभवपूर्वक सिद्ध होने वाली शिक्षा पद्धति रहेगी ।

8.2 प्रारम्भिक शिक्षा पाँच वर्ष की आयु के अनंतर आरंभ होगी।

शिक्षा का स्तर समय व अवधि

क.	प्रारंभिक शिक्षा	5 वर्ष
ख.	पूर्व माध्यमिक शिक्षा	3 वर्ष
ग.	उच्चत्तर मध्यमिक शिक्षा	3 वर्ष
घ.	स्नातक	3 वर्ष
ङ.	स्नातकोत्तर	2 वर्ष

शिक्षा की उचित अवधि सोलह वर्ष रहेगी।
अनुसंधान एवं आविष्कार विषय वस्तु अनुसार।
प्रशिक्षण व विशिष्ट शिक्षा- विषय वस्तु के अनुसार रहे।

9. शिक्षा की समग्रता

9.1 शिक्षा की पूर्णता केवल निपुणता, कुशलता एवं पांडित्य में ही है जो आर्थिक धार्मिक राज्यनीति को स्पष्ट करती है।

9.2 स्तर के अनुसार पढ़ाने का समय तथा समय खंड तदानरूप रहना आवश्यक है, वह निम्न प्रकार है:-

स्तर	प्राथमिक	पूर्व माध्य.	उच्च माध्य.	स्नातक	स्नातकोत्तर
समय खंड	30 मि.	40 मि.	50 मि.	1 घंटा	1 घंटा
समय खंड स.	6	6	6	7	7
पढ़ाने का दैनिक समय	3 घंटा	4 घंटा	5 घंटा	7 घंटा	7 घंटा
खेलने का दैनिक समय	3 घंटा	2.30 घंटा	2 घंटा	1 घंटा	1 घंटा
योग समय	6 घंटा	6.30 घंटा	7 घंटा	8 घंटा	8 घंटा

9.3 निरीक्षण-परीक्षण क्रम पद्धति:-

प्राथमिक	पूर्व माध्यमिक	उच्च माध्यमिक	स्नातक	स्नातकोत्तर
उपस्थिति	उपस्थिति	उपस्थिति	उपस्थिति	उपस्थिति
खेल	पठन	निर्माण	व्यक्तित्व	व्यक्तित्व
बोल	लेखन	आचरण	आचरण	आचरण
लेखन	खेल	पठन	लेखन /उत्पादन	लेखन /उत्पादन
आज्ञा पालन	निर्माण	लेखन	निबंध-पठन	प्रबंध पठन
आचरण	आचरण	खेल	कला	कला
कला	कला	कला	खेल	खेल

9.4 शिक्षा के स्तर के अनुसार प्रत्येक शिक्षक की क्षमता के प्रति अनुमान विद्यार्थियों की संख्या सहित, अधिकतम न्यूनतम के रूप में निम्न है:-

प्राथमिक		पूर्व माध्यमिक		उच्च. माध्यमिक		स्नातक		स्नातकोत्तर	
अधिकतम	न्यूनतम	अधिकतम	न्यूनतम	अधिकतम	न्यूनतम	अधिकतम	न्यूनतम	अधिकतम	न्यूनतम
30	15	40	20	50	25	60	30	80	40

यह अनुमान मनोविज्ञान पर आधारित है।

इसके अतिरिक्त शिक्षा के स्वत्व में एक ऐसी व्यवस्था रहेगी जिसमें साहस, शौर्य एवं प्रतिभा को पुरस्कार तथा पारितोषिक पूर्वक प्रोत्साहित करने का प्रावधान रहेगा और साथ ही इन सबका मानवीयता की सीमा में उपादेयी सिद्ध होना अनिवार्य होगा।

10. पात्रता की निर्णय पद्धति

10.1 प्रत्येक स्तर में शिक्षक, प्रशिक्षक एवं व्यवस्थापक का उनके व्यक्तित्व, उत्पादन क्षमता, शिक्षण एवं प्रशिक्षण की क्षमता तथा स्वास्थ्य एवं आयु पर पात्रता को निर्धारित करने वाली पद्धति रहेगी।

10.2 प्रत्येक कार्यकर्ता अपने निकटतम वरीय अधिकारी के आदेशनुसार कार्य करेगा।

10.3 प्रत्येक कार्यकर्ता द्वारा किए गए कार्य को दैनंदिनी में आदेश एवं संदर्भ सहित लिखेगा। यह दैनंदिनी उसकी कार्य कुशल दक्षता को स्पष्ट करेगी फलत: अग्रिम पात्रता उसके आधार पर सिद्ध होगी। मौखिक आदेश के प्रमाण में आदेशकर्ता दैनंदिनी पर हस्ताक्षर करेगा। पात्रता अनुरूप नियुक्तियाँ, प्रतिफल मान, उन्नति, प्रोत्साहन, पारितोषिक एवं सम्मान, पूरे राष्ट्र में एक सा रहेगा।

11. प्रारम्भिक शिक्षा

11.1 प्रत्येक विद्यार्थी को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर एवं व्यवस्था बिना भेदभाव के रहेगी।

11.2 प्रत्येक निर्धन विद्यार्थी को वित्तीय सहायता का प्रावधान रहेगा जिससे उनमें निर्धनता का खलन न हो एवं व्यक्तित्व और प्रतिभा के विकास के लिए अवसर पूर्णतया एक सा प्राप्त हो, यह व्यवस्था शिक्षा के प्रत्येक स्तर में रहेगी।

11.3 पाँचवी कक्षा के शिक्षा पर्यंत प्रधानत: कृतज्ञता, धैर्य साहस, उदारता, उत्तम आचरण एवं उद्देश्य की ओर निश्चित दिशादायी शिक्षा सम्पन्न होगी।

11.4 प्रत्येक विद्यार्थी को इस स्तर में खेल, बोल, लेखन, पठन, कला-निर्माण एवं उत्पादन में प्रवृत्त करने वाली शिक्षा समाविष्ट रहेगी।

11.5 प्रारम्भिक शिक्षा में ही प्रारम्भिक गणित की शिक्षा भी सम्मिलित रहेगी।

11.6 व्यवहार एवं आचरण संबंधी प्रारम्भिक शिक्षा को मानवीयता की सीमा में प्रदान किया जावेगा।

11.7 प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता एवं संभावना का प्रमाणीकरण उनके आचार्यों द्वारा निरीक्षण पूर्वक ही होगा।

12. पूर्व माध्यमिक शिक्षा

12.1 पूर्व माध्यमिक शिक्षा में व्यवहार-विज्ञान एवं भौतिक विज्ञान का प्रारूप समाविष्ट रहेगा। व्यवसाय व उत्पादन में दिशा – दर्शन रचना एवं कला- प्रदर्शन की क्षमता को विकसित करने की शिक्षा रहेगी।

12.2 इसी स्तर में व्यवसाय, व्यवहार, विचार एवं अनुभूति की समन्वयात्मक शिक्षा रहेगी।

13. उच्चतर माध्यमिक शिक्षा

13.1 उच्चतर माध्यमिक कक्षा में प्रवेशरत विद्यार्थियों की क्षमता, योग्यता, पात्रता, संभावना एवं आचरण प्रमाणीकरण के आनुषंगिक विषयों के चयन का अवसर रहेगा।

13.2 इस स्तर की शिक्षा, व्यवहारिक स्थायी मूलवत्ता एवं उसकी अनिवार्यता को आचरण एवं व्यवहार पूर्वक स्पष्ट करने वाली तथा व्यवसायिक मूल्यों की उपयोगिता एवं उसकी आवश्यकता को प्रयोग पूर्वक मूल्यों की उपयोगिता एवं उसकी आवश्यकता को प्रयोग पूर्वक सिद्ध करने वाली रहेगी।

13.3 स्वभाव, आचरण एवं प्रवृत्तियों का मूल रूप संस्कार ही है। इसके गुणात्मक परिवर्तन-प्रक्रिया का मानवीयता पूर्ण पद्धति से सर्वसुलभ बनाने की शिक्षा रहेगी जिससे व्यक्तित्व का निर्माण होगा। इसका प्रत्यक्ष रूप बहू-भोग वादी प्रवृत्ति से परिवर्तित होकर संयत भोग में विश्वास एवं दृढ़ता से परिपूर्ण होना है क्योंकि "स्वभाव ही आचरण के रूप में प्रत्यक्ष होता है, स्वभाव का गुणात्मक परिवर्तन ही संस्कार परिवर्तन है।"

13.4 मानवीयता की सीमा में व्यवहारिक एवं व्यवसायिक कुशलता तथा निपुणता प्रदान करने की शिक्षा रहेगी।

13.5 उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के अंत तक व्यवहार दक्ष एवं व्यवसाय में स्वावलंबन एवं परिश्रम के प्रति निष्ठा जागृत करने वाली शिक्षा रहेगी जिसको प्रोत्साहित करने के लिए जो व्यवस्था रहेगी वह उनके व्यक्तित्व एवं उत्पादन क्षमता पर भी निर्भर रहेगी।

14. उच्च शिक्षा

14.1 अनिवार्य विषय के अतिरिक्त स्नातक शिक्षा के विषयों का चयन रहेगा।

14.2 स्नातक शिक्षा में कम से कम तीन विषयों का चयन एच्छिक रहेगा।

14.3 स्नातक शिक्षा में दर्शन शास्त्र अनिवार्य रूप में रहेगा।

14.4 दर्शनशास्त्र में प्रमुखत: सामाजिक (धार्मिक), आर्थिक एवं राज्यनैतिक तथ्यों का बोधगम्य अध्ययन कराया जाएगा।

14.5 व्यक्तित्व की महत्ता, उत्पादन एवं उसमें संभवना की विशालता, आचरण की विशिष्टता तथा अपरिहार्यता के परिपूर्ण ज्ञान का अध्ययन किया जाएगा।

15. स्नातकोत्तर

15.1 अनिवार्य विषय के अतिरिक्त स्नातकोत्तर शिक्षा के विषय का चयन एच्छिक रहेगा।

15.2 स्नातकोत्तर शिक्षा में कम से कम 2 विषय रहेंगे जिसमें स्नातकीय स्तर की उत्तीर्णता प्राप्त होगी।

15.3 स्नातकोत्तर शिक्षा में दर्शन शास्त्र अनिवार्यतम रूप में रहेगा।

15.4 दर्शनशास्त्र में पूर्णतया समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद एवं अनुभावात्मक अध्यात्मवाद का अध्ययन रहेगा।

15.5 उत्पादन एवं व्यक्तित्व के संतुलनात्मक व समन्वयात्मक क्षमता को उद्घाटित करने योग्य अध्ययन होगा।

15.6 मानवीयता की सीमा में विधि शिक्षा का अध्ययन होगा।

16. तकनीकी शिक्षण-

16.1 उत्पादन एवं निर्माण शक्ति की विपुलता के लिए निपुणता एवं कुशलता को पूर्णतया प्रशिक्षित कराने के लिए समृद्ध प्रणाली, व्यवस्था एवं अध्ययन रहेगा जिससे मनुष्य की समान्य आकांक्षा एवं महत्वाकांक्षा से संबन्धित वस्तुओं का निर्माण सुगमता पूर्वक हो सके।

16.2 तकनीकी शिक्षण के साथ सामाजिकता तथा व्यक्ति में निष्ठा को व्यवहारिक रूप देने की व्यवस्था एवं व्यवस्था एवं प्रणाली अध्ययन के रूप में रहेगी।

16.3 शिक्षा के स्तर में अतिमानवीयता पूर्ण जीवन की संभावना को स्पष्ट करने योग्य अध्ययन रहेगा।

16.4 प्रत्येक विद्यार्थी को उत्पादन क्षमता में निष्णात बनाने के लिए अध्ययन होगा, जिससे अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग सम्पन्न हो सके।

16.5 तकनीकी अध्ययन के साथ व्यवहारिक अध्ययन अनिवार्य रूप में रहेगा जिससे प्रत्येक व्यक्ति उद्दमशील एवं सामाजिक सिद्ध हो सके।

16.6 कृषि, उद्योग व स्वास्थ्य संबंधी पूर्ण तकनीकी शिक्षा प्रत्यक्ष रूप से रहगी न कि औपचारिक रूप में रहेगी।

17. प्रौढ़ शिक्षा

17.1 साक्षरता के साथ ही मानवीयतापूर्ण जीवन की सीमा में आचरण, व्यवहार एवं उत्पादन में प्रोत्साहन प्रदान करने वाली प्रणाली रहेगी।

17.2 प्रौढ़ शिक्षा में भी कला एवं एवं व्यक्तित्व को प्रोत्साहित करनेवाली पद्धति रहेगी।

17.3 जनजाति की पठन क्षमता के निर्माण के लिए उनके अनुकूल समय में ही शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था रहेगी। साथ ही प्रकृति के विकास एवं इतिहास तथा मानव, मानव जीवन एवं जीवन के कार्यक्रम संबंधी प्रणाली रहेगी।

17.4 शिक्षा व्यवहार, व्यवसाय तथा व्यक्तित्व की समन्वयता के तारतम्य में रहेगी।

17.5 व्यक्तित्व एवं कला की वरीयता रहेगी साथ ही साहसिकता के पुरुस्कार की व्यवस्था रहेगी।

17.6 परस्पर संबंध में स्थापित मूल्यों को अध्ययन कराने की व्यवस्था रहेगी, ताकि वर्ग विहीन समाज भावना स्थापित हो सके।

17.7 स्थानीय संपदा का उपयोग करने योग्य क्षमता निर्माण करने की व्यवस्था रहेगी ताकि आर्थिक विषमता दूर हो सके एवं आत्मनिर्भर हो सके।

17.8 स्थानीय समस्या (व्यावहारिक एवं व्यावसायिक) का सर्वेक्षण पूर्वक समाधान हेतु पर्याप्त व्यवस्था रहेगी।

17.9 शिक्षा में व्यवसाय, व्यवहार, विचार एवं अनुभूति को एकसूत्रता का पूर्णतया ध्यान रहेगा।

17.10 प्रौढ़ शिक्षा में व्यावसायिक आत्मनिर्भरता तथा व्यक्तित्व एवं ग्राम जीवन में विश्वास उत्पन्न करने की व्यवस्था रहेगी।

17.11 ग्रामोद्योग एवं कुटीर उद्योग संबंधी सार्थक शिक्षा की व्यवस्था रहेगी।

18. स्नातक पूर्व

18.1 माध्यमिक शिक्षा के अनंतर दो वर्ष या उससे कम समय में दी जाने वाली समस्त शिक्षा स्नातक पूर्व में गण्य होगी।

18.2 इस शिक्षा में उत्पादन क्षमता या उत्पादन में सहायक क्षमता में गुणात्मक रूप प्रदान करने योग्य व्यवस्था रहेगी और साथ ही व्यावहारिक शिक्षा का समावेश रहेगा जिससे व्यक्तित्व सर्वसुलभ हो सके।

19. शोध अनुसंधान

19.1 स्नातकोत्तर शिक्षा के अनंतर शोध एवं अनुसंधान की व्यवस्था रहेगी।

19.2 अनुसंधान कर्ता का विषय एच्छिक रहेगा।

19.3 व्यवहार व्यवसाय एवं स्वास्थ्य की सीमा में शोध अनुसंधान प्रयास सम्पन्न होगा।

19.4 वैयक्तिक रूप में किए गए शोध व अनुसंधान के स्वागत हेतु व्यवस्था होगी। इस व्यवस्था में वर्तमान में पाई जाने वाली व्यवहारिक एवं व्यावसायिक समस्याओं के परिहार संबंधी उपलब्धि रहेगी।

19.5 व्यावहारिक अनुसंधान अखंड समाज के परिप्रेक्ष्य में तथा व्यावसायिक अनुसंधान मानव की सामान्य आकांक्षाओं एवं महत्वाकांक्षाओं की सीमा में रहेंगे जो शिक्षा और व्यवस्था में समाविष्ट होने योग्य होंगे।

20. शिष्ट मण्डल-

20.1 प्रत्येक राष्ट्रीय स्तर में एक शिष्ट मण्डल रहेगा जिसमें शोध एवं अनुसंधान कर्ताओं का समावेश रहेगा। यही राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शिष्टमंडल शिक्षा नीति प्रणाली तथा पद्धति की पूर्णता एवं दृढ़ता के प्रति दायित्व वहन का सजगता पूर्वक निर्वाह करेगा।

20.2 यही मण्डल वैध सीमा में शिक्षण संस्थाओं के दायित्वों का निर्धारण, दिशा-निर्देश, पद्धति तथा प्रणाली संबंधी आदेश देने का अधिकारी होगा।

20.3 इनके द्वारा दी गई प्रस्तावनाएं शासन- सदन द्वारा सम्मति पाने के लिए बाध्य रहेगी।

20.4 शिक्षा संबंधी गुणात्मक परिवर्तन के लिए उपयुक्त प्रस्तावनाधिकार इसी मंडल में समाहित रहेगा।

20.5 व्यक्तिगत रूप में प्राप्त प्रस्तावनाओं को अवगाहन करने की व्यवस्था रहेगी। साथ ही उनके लिए सम्मान व पुरस्कार प्रदान करने की व्यवस्था भी रहेगी। जिससे व्यक्तिगत प्रतिभा के प्रति विश्वास हो सके।

20.6 प्रत्येक राष्ट्र का शिष्ट मंडल मानवीयता की सीमा में ही शिक्षा नीति, प्रणाली एवं पद्धति का प्रस्ताव करेगा जिससे मंडलों में परस्पर विरोध न हो सके।

20.7 शिक्षा की सार्वभौमिकता की अक्षुण्णता के लिए अंतर्राष्ट्रीय शिष्ट मंडल रहेगा जिससे अखंड समाज की निरंतरता बनी रहे।

21. व्यवस्था –

21.1 प्रत्येक शिक्षण संस्था अपने क्षेत्र में प्रौढ़ व्यक्तियों को साक्षर बनाने तथा प्रत्येक बालक-बालिका को शिक्षा प्रदान करने के लिए उत्तरदाई होगा।

21.2 प्रत्येक पद में दायित्व शिष्ट मंडल द्वारा निर्धारित रहेगा।

21.3 संस्थाओं का दायित्व व निर्वाह-पद्धति, प्रत्येक शिक्षण संस्था अपने कार्यक्षेत्र में पाई जाने वाली सामाजिक, आर्थिक, राज्यनैतिक और व्यवहारिक व्यवस्था की परस्परता में समस्याओं का सर्वेक्षण करने की व्यवस्था करेगी। साथ ही वैध प्रणाली पद्धति नीति व व्यवस्था का पालन करने के लिए उत्तरदायी रहेगी।

21.4 स्थानीय स्थिति के चित्रणाधिकार का दायित्व स्थानीय संस्था का होगा।

21.5 प्रत्येक सर्वेक्षण पूर्ण चित्रण स्तर के अधिकारियों द्वारा सम्पन्न किया जाएगा उसका परीक्षण करने का अधिकार उनसे वरिष्ठ अधिकारी को होगा। इस प्रस्ताव के अध्ययन के लिए मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद प्रस्तुत हो चुके है जिसका कार्यक्रम रायपुर अछोटी में साकार होने की व्यवस्था है। जिससे ही-

भूमि स्वर्ग होगी । मनुष्य ही देवता होंगे ।।
धर्म सफल होगा । नित्य मंगल ही होगा ।।

ए. नागराज शर्मा

श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदांचल

अमरकंटक, जिला-शहडोल (म. प्र.)